देश की आवाज

हमारा स्वराज

भोपाल, इंदौर, उज्जैन से प्रकाशित

www.hamaraswaraj.com twitter.com/hamaraswaraj facebook.com/hamaraswaraj | भोपाल, गुरुवार, 26 जून 2025 | वर्ष: 14| अंक: 99 | पृष्ठ: 08 | मूल्य: 2 रुपए

'संविधान हत्या दिवस' पर संगोष्ठी

लोकतंत्र को बचाने का संघर्ष था आपातकाल के खिलाफ लड़ाई

हमारा स्वराज। भोपाल

देश में आपातकाल लागू होने की 50 वीं वर्षगांठ को बुधवार को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में 'आपातकाल विभीषिका' विषय पर संगोष्ठी में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्य अतिथि के रुप में कहा कि आपातकाल के विरुद्ध लड़ाई देश के लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई थी।

उन्होंने कहा कि आपातकाल के दौरान न्यायालयों के फैसलों को पलट दिया गया। आपातकाल देश के लोकतंत्र पर काले धब्बे के समान था। उन्होंने कहा कि आज से 50 वर्ष पूर्व 25 जून 1975 को जिन लोगों ने देश में आपात काल लागू किया था, वे ही इस कलंक के लिए जिम्मेदार हैं और वे कभी भी इस कलंक से मुक्त नहीं हो सकते हैं। कार्यक्रम में नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, जल संसाधन मंत्री तुलसी सिलावट, राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी, सांसद शंकर लालवानी, विधायक अजय विश्नोई, महेंद्र हार्डिया सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी मौजूद थे। संगोष्ठी का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लोकतंत्र सेनानियों ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए निर्णायक लड़ाई लड़ी। उस दौर में हजारों निरपराध लोगों को जेलों में बंद कर दिया गया। आपातकाल में लोगों पर बेइंतहा अत्याचार किए गए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए दिवंगत लोकतंत्र सेनानियों के योगदान का स्मरण भी किया। राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि आपातकाल के विरुद्ध लड़ाई देश की आजादी की दूसरी लड़ाई थी।

उन्होंने कहा कि आपातकाल के दौरान किसी की भी संपत्ति जप्त की जा सकती थी। आपातकाल के दौरान लोकसभा का कार्यकाल बढ़ाकर 6 वर्ष कर दिया गया था तथा संसद की बैठक के लिए कोरम की व्यवस्था समाप्त कर दी गई थी।

आपातकाल के बाद ही लागू हुआ वास्तविक लोकतंत्रः सुधांशु

राज्यसभा सांसद त्रिवेदी ने कहा कि आपातकाल में विधायिका, कार्यपालिका और न्याय-पालिका के साथ साथ मीडिया पर भी नियंत्रण लागू किया गया था। उन्होंने कहा कि देश में वास्तविक लोकतंत्र आपातकाल की समाप्ति के बाद ही लागू हुआ है। राज्यसभा सांसद त्रिवेदी ने कहा कि देश में वैचारिक स्वतंत्रता पाने की लड़ाई आज भी जारी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में हमें "आत्म गौरव" का आभास होने लगा है। श्री त्रिवेदी ने कहा कि लोकतंत्र हमारे देश में 1947 से नहीं बल्कि हजारों वर्ष पूर्व से लागू रहा है। उन्होंने कहा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र तो है ही, साथ ही "लोकतंत्र की जननी" भी है। पूर्व मंत्री श्री अजय विश्नोई ने आपातकाल में अपनी जेल यात्रा के अनुभव सुनाए। उन्होंने बताया कि 25 जून की रात में ही देश में सभी विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। कार्यक्रम में अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बुजुर्ग अब चुनौती

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 18 करोड़ की लागत से तैयार 'स्नेह धाम' का बुधवार को लोकार्पण किया। इसके साथ ही 565 करोड़ रुपए के विभिन्न निर्माण कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन भी किया। कार्यक्रम स्टार चौराहा इंदौर में आयोजित किया गया। यहां डॉ. यादव ने कहा कि हर दौर में विकास के मामले में इंदौर अग्रणी बना रहेगा। वृद्धजनों के लिए बनाए गए स्नेह धाम का जिक्र करते हुए सीएम ने कहा कि आजकल बच्चा-बच्ची कहीं काम करने चले जाते हैं।

राहत और बचाव का सिलसिला जारी

एमपी में सुरंग ढही, धर्मशाला में लैंडस्लाइड, अब तक 4 की मौत

हमारा स्वराज। भोपाल

बुधवार को दो बड़े हादसों में 4 लोगों की जान चली गई। पहली घटना मध्यप्रदेश के महू में सामने आई है। महू के पास इंदौर-इच्छापुर नेशनल हाईवे पर चोरल में निर्माणाधीन सुरंग का एक हिस्सा भरभराकर गिर गया। मलबे में दबकर दो मजदूरों की मौत हो गई।

हादसा बुधवार सुबह करीब 4 बजे हुआ। पुलिस और स्थानीय प्रशासनिक अधिकारी मौके पर हैं। उन्होंने प्राथमिक तौर पर इसकी वजह बारिश को बताया गया है। झारखंड निवासी विकास राय (29) की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, सिंगरौली निवासी लालजी कौल (26) ने इंदौर के अस्पताल में दम तोड़ दिया। सिमरोल थाना प्रभारी अमित कुमार के मुताबिक, हादसा इंदौर से करीब 35 किलोमीटर दूर चोरल इलाके में टनल नंबर 3 में हुआ। इसका काम हैदराबाद की मेघा इंजीनियरिंग एंड कंस्ट्रक्शन कंपनी कर रही है। बुधवार तड़के टनल का करीब 18 मीटर ऊंचा और 16 मीटर चौड़ा हिस्सा नीचे गिर पड़ा। सुरंग ढहने से जान गंवाने वाला विकास राय झारखंड में गिरिडीह जिले के झोंका वर्मासिया का रहने वाला था। शव पोस्टमॉर्टम के लिए इंदौर के जिला अस्पताल भेजा गया है। वहीं, लालजी कौल को गंभीर रूप से घायल होने के बाद इंदौर में तेजाजी नगर के जीवन ज्योति हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। यहां से एमवाय अस्पताल रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

हृदय विदारक घटना

मृतक विकास के जीजा और प्रत्यक्षदर्शी सुदामा सिंह के मुताबिक, रात 3.30 से 4.00 बजे के बीच टनल के ऊपर से पत्थर और मिट्टी गिरने से घटना हुई। हादसे में दो लोगों की मौत हुई है। पत्थर गिरने से एक लडका वहीं गाडी में चिपक गया था। वह गाडी में खडा होकर काम कर रहा था। हादसे में वह गाडी पर ही चिपका रह गया। हम लोग 8 दिन पहले ही यहां काम करने आए थे। मृतक विकास मेरा साला था।

कुल्लू में 3 जगह बादल फटा, पिता-बेटी समेत 3 बहे; लैंडस्लाइड से आदिकैलाश का रास्ता बंद

हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला में बुधवार को तेज बारिश हुई। खनियारा इलाके के सोकणी दा कोट में इंदिरा प्रियदर्शनी हाइड्रल प्रोजेक्ट में काम करने वाले 15-20 मजदूर मनुणी खड्ड (नदी) में बह गए। अबतक दो मजदूरों के शव मिले हैं।

मनुणी नदी आम दिनों में सूखी ही रहती है, लेकिन तेज बारिश के कारण नदी में अचानक से बाढ़ आ गई। मजदूर नदी किनारे बने शेड में रह रहे थे। इसलिए बाढ़ की चपेट में आ गए। कुल्लू जिले में भी 3 जगह सैंज घाटी के जीवा नाला, गढ़सा घाटी के शिलागढ़ और बंजार के होरनगढ़ में बादल फटा। जीवा नाला में बाप-बेटी समेत 3 लोग बह गए। उत्तराखंड के पिथौरागढ़ में धारचुला-लिपुलेख रोड पर लैंडस्लाइड हुआ। इसके कारण आदिकैलाश रोड बंद हो गया। दोनों तरफ वाहन फंसे हुए हैं। हल्द्वानी में एक कार नहर में गिर गई। कार सवार 7 लोगों में से 4 की मौत हो गई। इनमें तीन दिन का बच्चा भी शामिल है। केरल के वायनाड के आज सुबह से तेज बारिश हो रही है। चूरलमाला में बाढ़ का अलर्ट जारी किया गया है। पिछले साल मुडक्कई, चूरलमाला, अट्टामाला समेत दूसरे इलाकों में लैंडस्लाइड में 369 लोगों की मौत हुई थी। जम्मू में मंगलवार रात हुई भारी बारिश के चलते तवी नदी उफान पर है। इसमें एक शख्स फंस गया। SDRF के लोगों ने सीढ़ी के सहारे उसका रेस्क्यू किया। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में भी तेज बारिश का अलर्ट है।

CBSE 10वीं की परीक्षा 2026 से 2 बार होगी

हमारा स्वराज। नई दिल्ली

CBSE 10वीं के स्टूडेंट 2026 से साल में 2 बार एग्जाम देंगे। एग्जामिनेशन कंट्रोलर संयम भारद्वाज ने बुधवार को यह जानकारी दी है। नए परीक्षा पैटर्न के मुताबिक, पहली परीक्षा सभी छात्रों के लिए जरूरी होगी और दूसरी ऑप्शनल। पहली परीक्षा फरवरी और दूसरी मई में होगी। नतीजे अप्रैल और जून में जारी किए जाएंगे। साथ ही सप्लीमेंट्री एग्जाम खत्म कर दिए गए हैं। 12वीं बोर्ड पर अभी यह फैसला लागू नहीं होगा। दूसरी परीक्षा ऑप्शनल एग्जाम में छात्रों को साइंस, मैथमेटिक्स, सोशल साइंस और लैंग्वेजेस में से 3 सब्जेक्ट में परफॉर्मेंस सुधारने इजाजत दी जाएगी।

ट्रम्प को फरवरी में हमले का प्लान बताया

नई दिल्ली। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बुधवार को कहा कि उन्होंने फरवरी में व्हाइट हाउस की यात्रा के दौरान ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को ईरान पर हमले का प्लान बता दिया था। नेतन्याहू ने यरुशलम में कैबिनेट मीटिंग से पहले कहा, 'मैंने हमले का दो प्लान शेयर किया था। एक अमेरिका के साथ और दूसरा अमेरिका के बिना। मैंने साथ देने या न देने का फैसला ट्रम्प पर छोड़ा था।' दूसरी तरफ, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने नीदरलैंड में नाटो समिट में मीडिया से कहा कि ईरानी परमाणु ठिकानों पर अमेरिकी हमलों के कारण 12 दिनों तक चली ईरान-इजराइल जंग रुकी। उन्होंने कहा, '12 दिनों के दौरान ईरान नर्क से गुजरा।

अशोकनगर में कथित मल खिलाने के मामले ने पकड़ा तूल पुलिस ने बताया बेबुनियाद, कलेक्टर ने दिए जांच के निर्देश

हमारा स्वराज। अशोकनगर

अशोकनगर जिले के मुंगावली थाना क्षेत्र के बरवाय मूडरा गांव में गजराज लोधी नाम के युवक को कथित रूप से मल (गंदगी) खिलाने के मामले ने जहां राजनीतिक तूल पकड़ लिया है, वहीं पुलिस प्रशासन ने आरोपों को असत्य और बेबुनियाद करार देते हुए तथ्यों सहित खंडन किया है। इस मामले में कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी ने हस्तक्षेप करते हुए पीड़ित पक्ष को न्याय दिलाने की मांग की है, जबकि अशोकनगर कलेक्टर आदित्य सिंह का कहना कि इस मामले से जुड़े सभी पहलुओं की तथ्यात्मक जांच करा कर कार्रवाई की जाएगी।

बुधवार को गजराज लोधी और उसके भाई रघुराज लोधी कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी से भोपाल में मिले और पूरी आपबीती बताई। उन्होंने आरोप लगाया कि गांव के सरपंच और अन्य लोगों ने राशन पर्ची को लेकर विवाद में मारपीट की और गंदगी खिलाई। गजराज का कहना है कि थाने में शिकायत दर्ज कराने गए तो पुलिस ने रिपोर्ट लेने से मना कर दिया और उन्हें भगा दिया। पीड़ित ने आरोप लगाया कि सरपंच रविन्द्र लोधी और भाजपा नेता राजेश लोधी ने बाद में धमकाकर एक वीडियो बनवाया जिसमें गजराज को कहना पड़ा कि उसके साथ कोई घटना नहीं हुई।

जीतू पटवारी से मुलाकात करते कथित पीड़ित।

मामला राहुल गांधी तक पहुंचा

इस मामले की गंभीरता को देखते हुए जीतू पटवारी ने मौके से ही अशोकनगर कलेक्टर आदित्य सिंह से फोन पर बात की और तत्काल कार्रवाई की मांग की। पटवारी ने कहा कि "किसी को मल खिलाना जघन्य अपराध है। यदि आठ दिन के भीतर कार्रवाई नहीं हुई, तो मैं स्वयं गांव आकर आंदोलन करूंगा। राहुल गांधी तक यह मामला पहुंच चुका है, उन्होंने भी चिंता जताई है।" पटवारी ने इसे मानवता से जुड़ा मामला बताया, ना कि किसी जाति या दल से जुड़ा मुद्दा।

पुलिस का खंडनः 'आरोप असत्य और मनगढ़ंत', वायरल वीडियो से मामला उलझा

इस पूरे मामले में अशोकनगर पुलिस ने आरोपों को पूरी तरह असत्य और तथ्यहीन बताया है। पुलिस अधीक्षक विनीत कुमार जैन ने कहा, "10 अप्रैल को ग्राम मूडरा निवासी विकास यादव ने डायल-100 पर शिकायत की थी कि एक व्यक्ति शराब पीकर उत्पात मचा रहा है और पत्थर फेंक रहा है। डायल-100 की टीम गजराज लोधी को थाने लाई।" उन्होंने बताया कि गजराज के भाई रघुराज लोधी ने एसडीओपी मुंगावली से संपर्क किया, उन्होंने तस्दीक कर रघुराज को सूचना दी कि उसके भाई गजराज के साथ कोई मारपीट नहीं हुई थी। एसपी जैन ने बताया कि तब गजराज नशे में होने के कारण ठीक से चल और बोल नहीं पा रहा था। थाने पहुँची

उसकी मां के साथ घर भेज दिया गया था। एसपी जैन ने कहा कि उस दिन और न ही बाद में गजराज एवं उसके परिजनों में से किसी ने भी मल खिलाने का कोई जिक्र नहीं किया था। 10 जून को गजराज द्वारा जनसुनवाई में कलेक्टर को दी गई शिकायत में भी ऐसी किसी बात का उल्लेख नहीं किया गया था। एसपी जैन ने बताया कि गजराज द्वारा जनसुनवाई में राशन पर्ची नहीं दिए जाने की शिकायत की जांच ADM और CEO जिला पंचायत द्वारा संयुक्त रूप से की गई थी, जिसमें यह स्पष्ट हुआ कि गजराज द्वारा पात्रता पर्ची न मिलने का आरोप भी असत्य था। उन्होंने आगे बताते हुए कहा कि "एक वीडियो भी वायरल हो रहा है जिसमें गजराज का भाई रघुराज, विकास यादव से कह रहा है कि 25 लाख रुपये दो, नहीं तो मैं यह मामला आगे बढ़ाऊंगा। इसमें विकास यादव कहता है कि किस बात के 25 लाख दूं? और दे भी दूं, तो क्या गारंटी है?" एसपी ने इस वीडियो को मामले को नया मोड़ देने वाला करार देते हुए कहा कि इसकी विधिवत जांच की जा रही है।

कलेक्टर का बयानः 'हर पहलू की होगी जांच, नियमानुसार कार्रवाई होगी'

इस मामले पर अशोकनगर कलेक्टर आदित्य सिंह ने बताया कि "मामले के सभी पक्षों की निष्पक्ष जांच कराई जाएगी और जो तथ्य सामने आएंगे, उनके अनुसार नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

अंतरिक्ष पहुंचकर एस्ट्रोनॉट शुभांशु बोले- व्हाट ए राइड

नई दिल्ली। भारतीय एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला एक्सियम मिशन 4 के तहत आज यानी, 25 जून को इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन के लिए रवाना हुए। उनका ये मिशन पहले 6 बार तकनीकी दिक्कतों के कारण टल चुका था। उनके साथ तीन अन्य एस्ट्रोनॉट भी स्पेस स्टेशन के लिए रवाना हुए।

अंतरिक्ष में पहुंचने के बाद शुभांशु ने कहा- व्हाट ए राइड। मेरे कंधे पर लगा तिरंगा बताता है कि मैं आप सभी के साथ हूं। वहीं लॉन्चिंग सफल होने पर शुभांशु के माता-पिता आशा शुक्ला और शंभु दयाल शुक्ला भावुक हो गए। उन्होंने बेटे की सफलता पर ताली बजाकर खुशी जताई। मिशन भारतीय समयानुसार दोपहर करीब 12:00 बजे फ्लोरिडा में नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च किया गया।

राजा रघुवंशी हत्याकांड

पुलिस के सामने रिलेशन की बात मानी

सोनम-राज बोले- हां, हमें एक-दूसरे से प्यार है

हमारा स्वराज । इंदौर

राजा रघुवंशी के मर्डर की आरोपी सोनम और राज कुशवाह ने शिलॉन्ग पुलिस के सामने पहली बार रिलेशन में होने की बात कही है। शिलॉन्ग एसपी विवेक स्येम ने बताया कि दोनों ने पूछताछ में कहा- हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं। दोनों ने पहले ही अपराध स्वीकार कर लिया है। हमारे पास सबूत हैं। सोनम और राज कुशवाह के बीच प्रेम संबंध थे और दोनों ने राजा रघुवंशी की हत्या की साजिश रची थी। मुझे नहीं लगता कि हमें इस स्तर पर (नैरो एनालिसिस टेस्ट) क्यों करना चाहिए।

बिना खोले ही फेंक दिया था सोनम का लैपटॉप

शिलोम जेम्स ने पुलिस को बताया कि उसने सोनम के लैपटॉप को खोलकर देखे बिना ही फेंक दिया था। शिलोम के मुताबिक, मुझे पता था कि यह डिजिटल एविडेंस है, जिसमें मैं फंस सकता हूं। मैं नहीं चाहता था कि पुलिस को पता चले कि इंदौर में सोनम, विशाल चौहान और राज कुशवाह उसके हीराबाग स्थित जी-1 फ्लैट में रुके थे। शिलॉन्ग पुलिस को शक है कि जो लैपटॉप सोनम इस्तेमाल कर रही थी, उसमें व्यापार और हवाला की

जानकारियां थीं। वह बतौर सबूत शिलॉन्ग कोर्ट में अहम साबित हो सकता है। टेक्निकल टीमों ने आरोपियों के बीच मैसेज और बातचीत का पूरा डेटा तैयार किया है। इसको शिलॉन्ग पुलिस सोनम और अन्य आरोपियों की अगली पेशी पर कोर्ट में पेश कर सकती है।

सोनम के दोस्तों की जानकारी निकाली

शिलॉन्ग पुलिस ने सोनम के दोस्तों की जानकारी भी निकाली है। उसे शक है कि सोनम ने इतने बड़े हत्याकांड को अंजाम देने के पहले अपने किसी फ्रेंड से बात की होगी। हालांकि शिलॉन्ग पुलिस ने अभी तक किसी से पूछताछ की बात नहीं कही है। जिस लड़की अलका से सोनम की गहरी दोस्ती होने की बात पता चली थी, वह भी अभी तक सामने नहीं आई है। वहीं, 24 जून को राजा रघुवंशी के परिवार ने मामले में हाईकोर्ट जाने की बात कही। राजा के बडे भाई सचिन रघुवंशी ने शिलॉन्ग के वकीलों से एक अपील की है कि सोनम, राज, आकाश और आनंद जघन्य हत्याकांड में शामिल हैं। किसी वकील को इन आरोपियों की पैरवी नहीं करनी चाहिए। इंदौर से भी इस मामले में किसी वकील को आगे नहीं आना चाहिए।

इधर, इंदौर में शिलॉन्ग एसआईटी ने सोनम की अवैध पिस्टल बरामद की है। ये पिस्टल इंडस्ट्रीज हाउस के पीछे नाले में एक सफेद थैली में मिली, जो सोनम के बैग में थी। बिल्डिंग कॉन्ट्रैक्टर शिलोम जेम्स के घर के बाहर खड़ी एक कार से करीब 1 लाख रुपए भी बरामद किए गए हैं। शिलॉन्ग पुलिस बिल्डर लोकेंद्र तोमर, शिलोम और चौकीदार बलवीर को क्राइम ब्रांच थाने ले गई। यहां तीनों का आमना-सामना कराया जाएगा।

पुलिस को सोनम के लैपटॉप की तलाश है। पुलिस उसे ढूंढने के लिए मंगलवार को इंदौर के महालक्ष्मी नगर इलाके में पहुंची थी। टीम उस बिल्डिंग के कॉन्ट्रैक्टर-ब्रोकर शिलोम जेम्स और चौकीदार बलवीर अहिरवार को भी साथ ले गई थी, जिसमें सोनम रुकी थी।

पुलिस के हाथ हवाला कारोबार के भी इनपुट लगे हैं। अनुमान है कि सोनम के लैपटॉप में इसके लेन-देन का हिसाब मिल सकता है। इस लैपटॉप को शिलोम ने डिजिटल एविडेंस समझकर फेंक दिया था। कुछ ऐसी जानकारी भी पता चली है, जिससे तांत्रिक क्रिया के चलते मर्डर का शक गहरा रहा है। ऐसे में शिलॉन्ग पुलिस अभी शिलोम जेम्स और चौकीदार बलवीर अहिरवार को लेकर इंदौर में ही रुकेगी।

आपातकाल की विभीषिका पर ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आयोजित संगोष्ठी में शामिल हुए मुख्यमंत्री यादव

इंदौर को दी 565 करोड़ की सौगात

हमारा स्वराज । इंदौर

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आज इंदौर पहुंचे और कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। उन्होंने आज इंदौर को कई बड़ी सौगातें भी दी। वे आपातकाल की विभीषिका पर ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में आयोजित संगोष्ठी में शामिल हुए। इससे पहले उन्होंने वरिष्ठ नागरिक भवन 'स्नेह धाम' का लोकार्पण किया और 381 करोड़ की लागत से पूरे होने वाले विकास कार्यों का शिलान्यास भी किया।

वृद्धजनों के लिए तैयार इस स्नेह धाम में कई सुविधाएं होंगी। 6 मंजिला इस भवन में पुस्तकालय होगा, जिसमें धार्मिक एवं अन्य पुस्तकें पढ़ने को मिलेंगी। इसका निर्माण इंदौर विकास प्राधिकरण ने किया है और 16 करोड़ रुपए की लागत से इसमें 32 फ्लैट बनवाए गए हैं। जिनमें वृद्धजन रहेंगे। बताया गया कि इंदौर विकास प्राधिकरण द्वारा निर्मित यह "स्नेहधाम" भवन न केवल प्रदेश का पहला है, बल्कि अपने तरह की एक प्रेरणादायी और मानवीय पहल भी है, जो वरिष्ठ नागरिकों को उनके जीवन के उत्तरार्ध में सम्मान, सुविधा और सुरक्षा प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोकार्पण अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में इंदौर को 565 करोड़ रुपये से अधिक के लागत के विकास कार्यों की सौगात दी। उन्होंने इस मौके पर लगभग 90 करोड़ रुपये लागत के विकास कार्यों का लोकार्पण किया और 476 करोड़ रुपये से अधिक लागत के विकास कार्यों का शिलान्यास किया। एमआर-11 की मास्टर प्लान की रोड के अलावा योजना 136 में बनाई जाने वाली 100 करोड़ की बिल्डिंग सहित टीपीएस योजनाओं के कई विकास कार्य और पानी की टंकियों के निर्माण का शिलान्यास किया। प्राधिकरण द्वारा टीपीएस-4 में रोड और क्रश बैरियर का निर्माण, मास्टर प्लान की सड़क, बिजली के सब स्टेशनों के निर्माण, योजना 166 में विद्युतीकरण, टीपीएस-10 में ग्राम बांगड़दा, पाल कांकरिया, टिगरिया बादशाह में विकास कार्य के अलावा योजना 151 और 169बी में 21 मीटर ऊंची पानी की टंकियों का निर्माण भी कराया जा रहा है। देश में आपातकाल लागू होने की 50 वीं वर्षगांठ को बुधवार को 'संविधान हत्या दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में 'आपातकाल विभीषिका' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि आपातकाल के विरुद्ध लड़ाई, देश के लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई थी।आपातकाल के दौरान न्यायालयों के फैसलों को पलट दिया गया। आपातकाल देश के लोकतंत्र पर काले धब्बे के समान था। उन्होंने कहा कि आज से 50 वर्ष पूर्व 25 जून 1975 को जिन लोगों ने देश में आपात काल लागू किया था, वे ही इस कलंक के लिए जिम्मेदार हैं और वे कभी भी इस कलंक से मुक्त नहीं हो सकते हैं। कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी, प्रदेश के नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, सांसद शंकर लालवानी, पूर्व मंत्री अजय विश्नोई और विधायक महेंद्र हार्डिया सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी मौजूद थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लोकतंत्र सेनानियों ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी। उस दौर में हजारों निरपराध लोगों को जेलों में बंद कर दिया गया है। आपातकाल में लोगों पर बेइंतहा अत्याचार किए गए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने संबोधन में लोकतंत्र की रक्षा के लिए दिवंगत लोकतंत्र सेनानियों के योगदान का स्मरण भी किया।

इंदौर में गंदे पानी पर निगमायुक्त की चेतावनी

शिकायत आई, तो संबंधित अधिकारी व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार माने जाएंगे

हमारा स्वराज । इंदौर

इंदौर में बारिश के बाद कई इलाकों में नलों से गंदा पानी आने की शिकायतों को लेकर नगर निगम अब एक्शन मोड में आ गया है। बुधवार को नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा ने सभी जोनल अधिकारियों के साथ बैठक की और स्पष्ट निर्देश दिए कि शहर में अब किसी भी क्षेत्र से गंदे पानी की शिकायत नहीं मिलनी चाहिए। बैठक में जोनवार शिकायतों की समीक्षा की गई। अधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों की जानकारी प्रेजेंटेशन के माध्यम से दी। आयुक्त ने हर जोन की स्थिति पर बात की और कहा कि जहां समस्या है, वहां तुरंत सुधार करें।

आयुक्त शिवम वर्मा ने कहा – "गंदे पानी की शिकायतें बार-बार आ रही हैं, जबकि कई बार निर्देश दिए जा चुके हैं। यदि समस्या बनी हुई है तो पाइपलाइन बदलें। कोई तकनीकी दिक्कत है तो तुरंत ठीक करें। अगर अब शिकायत आई, तो संबंधित अधिकारी व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार माने जाएंगे।" उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि जहां सड़क निर्माण या अन्य काम हो रहे हैं, वहां यह ध्यान रखा जाए कि पेयजल पाइपलाइन को नुकसान न पहुंचे और पानी दूषित न हो। बारिश के दौरान कई क्षेत्रों में नलों से बदबूदार और गंदा पानी आने की शिकायतें मिल रही हैं। इसकी वजह अक्सर सीवर लाइन और पेयजल लाइन में लीकेज या क्रॉस-कनेक्शन होती है। इसी समस्या को गंभीरता से लेते हुए नगर निगम ने यह बैठक बुलाई।

आयुक्त ने कहा कि "हर अधिकारी अपने क्षेत्र का निरीक्षण करे और यह सुनिश्चित करे कि लोगों को साफ पानी मिल रहा है। गंदे पानी की समस्या अब बर्दाश्त नहीं की जाएगी।" उन्होंने दोहराया कि इंदौर जैसे शहर में गंदे पानी की कोई जगह नहीं होनी चाहिए, और निगम के हर अधिकारी को जिम्मेदारी लेकर काम करना होगा।

बारिश ने बढ़ाई मुश्किलें

जल भराव से प्रभावित कई क्षेत्र

हमारा स्वराज । उज्जैन

उज्जैन शहर में पिछले एक घंटे से लगातार हो रही मूसलधार बारिश ने जनजीवन को प्रभावित कर दिया है। मौसम विभाग द्वारा जारी किए गए अलर्ट के अनुसार, आसपास के कई जिलों में तेज बारिश की संभावना है, जिससे लोगों में चिंता का माहौल है। गधा पुलिया और तोपखाना क्षेत्र में जल भराव की स्थिति गंभीर हो गई है। यहां पिछले कई वर्षों से बारिश के दौरान जल भराव की समस्या बनी रहती है, लेकिन इस बार की बारिश ने स्थिति को और अधिक गंभीर बना दिया है। कई स्थानों पर सड़कें जलमग्न हो गई हैं, जिससे आने-जाने वाले वाहनों में पानी भर गया है। कई गाड़ियां बंद हो गई हैं, और लोग मजबूरन अपनी गाड़ियों को पैदल घसीटते हुए नजर आए। लोगों का कहना है कि इस क्षेत्र में जल निकासी की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण हर बार बारिश के दौरान ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है।

एमडी ड्रग्स सप्लाई करने आए 4 तस्कर गिरफ्तार

हमारा स्वराज । इंदौर

इंदौर क्राइम ब्रांच ने कार से एमडी ड्रग्स सप्लाई करने आए चार तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों से 57 ग्राम एमडी ड्रग्स और एक कार जब्त की गई है। जब्त ड्रग्स की अंतरराष्ट्रीय कीमत लगभग 60 लाख रुपए बताई गई है।

एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया ने बताया कि स्टील चौराहे के आगे रैनबसेरा के सामने वीआईपी रोड पर कार सवार चार ड्रग्स तस्करों की सूचना मिली थी। टीम ने टाटा टियागो कार को रोका। आरोपियों से 57 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद की गई। पूछताछ में पता चला आरोपी खुद भी नशे के आदी हैं और सस्ते दामों पर अन्य शहरों से ड्रग्स लाकर यहां सप्लाई करने की योजना बना रहे थे। आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। पुलिस जल्द ही रिमांड लेकर आगे की पूछताछ करेगी।

पुलिस ने सुधीर चौहान (25), निवासी उज्जैन, दिलीप उर्फ दूल्हे सिंह (34), निवासी आगर, धर्मेंद्र सिंह सिसौदिया (29), निवासी झालावाड़ (राजस्थान), दुले सिंह राजपूत (43), निवासी आगर को गिरफ्तार किया है।

कलेक्टर ने श्री मंगलनाथ मंदिर का निरीक्षण किया

हमारा स्वराज । उज्जैन

कलेक्टर रौशन कुमार सिंह ने बुधवार दोपहर श्री मंगलनाथ मंदिर का निरीक्षण कर मंदिर उन्नयन के प्रस्तावित कार्यों की जानकारी युडीए सीईओ संदीप सोनी से प्राप्त कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। कलेक्टर ने मंदिर के कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने श्रध्दालुओं की सुविधा के लिए मंदिर में पेयजल, फुटपाथ निर्माण, मोबाइल लॉकर आदि प्रस्तावित कार्य जल्द शुरु कर पूर्ण करने के निर्देश निर्माण एजेंसी युडीए को दिए। इसके बाद उन्होंने भगवान श्री मंगलनाथ का पूजन अर्चन किया। इस दौरान उज्जैन सिटी एसडीएम एलएन गर्ग, तहसीलदार रुपाली जैन, श्री मंगलनाथ मंदिर प्रशासक कृष्ण कुमार पाठक आदि उपस्थित रहे ।

पानी की टंकी में गिरने से महिला की मौत

हमारा स्वराज । इंदौर

संयोगितागंज थाना क्षेत्र के रतलाम कोठी इलाके में बुधवार सुबह एक महिला की पानी की टंकी में गिरने से मौत हो गई। बताया जा रहा है कि हादसा बारिश के कारण फिसलन की वजह से हुआ। पुलिस के मुताबिक, सुबह करीब 8 बजे 43 वर्षीय प्रियंका, पिता महेन्द्र सिंह, घर के बगीचे में पानी की मोटर चालू करने गई थीं। इसी दौरान उनका पैर फिसला और वे पास ही बनी पानी की टंकी में गिर गईं।

कुछ देर तक जब प्रियंका नजर नहीं आईं और मोटर बंद नहीं हुई, तो परिजन उन्हें देखने बाहर निकले। वहां उन्होंने देखा कि प्रियंका टंकी में पड़ी हुई हैं। उन्हें तुरंत बाहर निकाला गया और एमवाय अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया।

परिजनों ने बताया कि प्रियंका अपने पिता और भाइयों के साथ रहती थीं। हादसे की सूचना मिलते ही संयोगितागंज पुलिस मौके पर पहुंची और मर्ग कायम किया। फिलहाल पुलिस ने मामला जांच में लिया है।

महिला ने जहर पीकर की खुदकुशी : राऊ इलाके में रहने वाली एक महिला ने पारिवारिक विवाद के चलते जहरीला पदार्थ पी लिया। महिला को गंभीर हालत में एमवाय अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। फिलहाल पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। राऊ पुलिस के मुताबिक, मृतका का नाम दुर्गा (30) पत्नी रामहेत सेन है, जो साईं बिहार कॉलोनी में रहती थीं। रविवार सुबह उनके पति रामहेत उन्हें अस्पताल लेकर पहुंचे थे। मंगलवार रात इलाज के दौरान दुर्गा की मौत हो गई।

नगर निगम की कार्रवाई

छावनी क्षेत्र में रिमूवल टीम ने हटाया शेड

हमारा स्वराज । भोपाल

इंदौर के छावनी क्षेत्र में नगर निगम की टीम ने बुधवार को रिमूवल की कार्रवाई की। कार्रवाई के दौरान बड़ी संख्या में नगर निगम का अमला और पुलिस बल भी मौजूद रहा। टीम की ये कार्रवाई करीब एक घंटा चली। यहां बने एक शेड को हटाने की कार्रवाई की गई।

निगम अधिकारियों के मुताबिक बुधवार को टीम छावनी क्षेत्र पहुंची। जेसीबी मशीन और दल बल के साथ निगम का अमला यहां पहुंचा। जिसके बाद यहां वाइन शॉप के पास बने शेड को हटाया गया। बड़े हिस्से में ये शेड बना हुआ था, जिसे नगर निगम की टीम ने जेसीबी मशीन के मदद से तोड़ दिया। हालांकि कार्रवाई के पहले शेड को खाली करा दिया गया था। यहां पर टीन का शेड बना हुआ था। टीम ने कार्रवाई करते हुए जेसीबी मशीन से शेड को तोड़ना शुरू किया। जिसके बाद पूरा शेड तोड़ दिया गया। इस दौरान कार्रवाई देखने के लिए भी लोग जमा हो गए। टीन शेड को खुद से हटाने की बात भी वहां कुछ लोगों ने कही, लेकिन निगम ने कार्रवाई करते हुए उसे पूरा तोड़ दिया। कार्रवाई करने पहुंची नगर निगम की रिमूवल टीम के साथ भारी संख्या में नगर निगम का अमला मौजूद रहा। कार्रवाई के पहले संबंधित थाने का बल भी कार्रवाई के दौरान मौजूद रहा। जेसीबी मशीन के साथ अमला यहां पहुंचा और करीब एक घंटे की कार्रवाई कर शेड को तोड़ा और मलवा भी ट्रक में भर कर ले गए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में हुई नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण की 267वीं बैठक

नर्मदा घाटी परियोजनाओं के संचालन में सौर ऊर्जा को प्रोत्साहित किया जाए

हमारा स्वराज। भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि नर्मदा नदी राज्य की जीवनदायिनी है। नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण के अंतर्गत संचालित गतिविधियों से प्रदेश में सिंचाई के रकबे और ऊर्जा उत्पादन में बहुत वृद्धि हुई है जिसके चलते प्रदेशवासियों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। मुख्यमंत्री ने कहा कि परियोजना के अंतर्गत निर्मित सिंचाई व्यवस्था में सौर ऊर्जा के उपयोग को अधिक से अधिक प्रोत्साहित किया जाए। जल उद्वहन में सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाने से बिजली पर होने वाले व्यय में कमी लाई जा सकेगी। किसानों को भी सिंचाई में सौर ऊर्जा के उपयोग के लिए प्रेरित किया जाए। मां नर्मदा के जल का प्रदेश हित में अधिकतम उपयोग सुनिश्चित किया जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण की 267वीं बैठक बुधवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में संपन्न हुई। अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, मनीष रस्तोगी सहित प्राधिकरण के अन्य अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

बैठक में शहीद ईलाप सिंह माईक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना जिला हरदा, सेंधवा माईक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना जिला बड़वानी, निवाली उद्वहन सिंचाई परियोजना जिला बड़वानी, धार उद्वहन माईक्रो सिंचाई परियोजना, मॉ रेवा उद्वहन सिंचाई परियोजना जिला देवास की पुनरीक्षित प्रशासकीय स्वीकृति के संबंध में निर्णय लिए गए। बैठक में निर्माणाधीन स्लीमनाबाद टनल के तकनीकी पहलुओं पर चर्चा हुई। इसके साथ ही डोबी सिंचाई परियोजना, भीकनगांव बिंजलवाडा माईक्रो सिंचाई परियोजना, आई.एस.पी.-पार्वती लिंक परियोजना, खालवा उद्वहन माईक्रो सिंचाई परियोजना जिला खण्डवा की समयवृद्धि प्रस्ताव पर भी बैठक में विचार-विमर्श हुआ।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में हुई बैठक में मोरंड गंजाल बांध एवं दाबयुक्त सिंचाई परियोजना के निर्माण में आईएसपी जलाशय और अपर नर्मदा परियोजना के कमाण्ड में निर्माण कार्य आरंभ करने के संबंध में निर्णय लिया गया। बैठक में विजयराघवगढ़ उद्वहन माईक्रो सिंचाई परियोजना, गुनौर माईक्रो सिंचाई परियोजना, झिरन्या एक्सटेंशन (विस्तार) माईक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना, बड़ादेव चरगंवा सूक्ष्म उद्वहन सिंचाई परियोजना, खेड़ी बुजुर्ग उद्वहन माईक्रो सिंचाई परियोजना जिला धार की प्रशासकीय स्वीकृति के संबंध में विचार-विमर्श हुआ। बैठक में नर्मदा नदी के धार्मिक एवं सामाजिक और पर्यटन महत्व के स्थलों पर घाट निर्माण के संबंध में कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए गए।

आपातकाल की घोषणा की 50वीं बरसी पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का संदेश

लोकतंत्र की रक्षा के लिए मीसाबंदियों का संघर्ष स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों जैसा

हमारा स्वराज। भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देश में आपातकाल लागू किए जाने की 50वीं बरसी पर कहा है कि गणतंत्र की रक्षा के लिए जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित सभी देशभक्तों ने आपातकाल के संघर्ष में कुर्बानी दी है। इसी का प्रतिफल है कि आज दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र सुरक्षित है। भारत में संघ परिवार ने लोकतंत्र की पुनर्स्थापना का कार्य किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को मीडिया को जारी संदेश में यह विचार व्यक्त किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, हमारे मार्गदर्शक लालकृष्ण आडवाणी, पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह तथा श्रद्धेय मोरारजी देसाई सहित विपक्ष के सभी नेताओं ने एक स्वर में आपातकाल का विरोध करते हुए लोकतंत्र की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

यह स्वाधीनता संग्राम में क्रांतिकारियों द्वारा किए गए संघर्ष और बलिदान की याद दिलाता है। इसीलिए सभी मीसाबंदियों को लोकतंत्र सेनानी नाम मिला है। उन्होंने कहा कि एशिया में लोकतंत्र कहीं बचा है तो उसमें जनता पार्टी सहित विपक्षी नेताओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। उल्लेखनीय है कि 25 जून 1975 को देश में आपातकाल लागू किया गया था। इसे लोकतंत्र के लिए काला दिन माना जाता है।

कतर से मनीषा की सकुशल स्वदेश वापसी

मुख्यमंत्री ने वीडियो कॉल कर कुशलक्षेम जानी

हमारा स्वराज। भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इजरायल-ईरान युद्ध के चलते कतर से वापसी के लिये रह गई उज्जैन निवासी मनीषा भटनागर की सकुशल स्वदेश वापसी के बाद उनसे वीडियो कॉल पर चर्चा कर उनकी कुशलक्षेम पूछी।

उल्लेखनीय है कि मनीषा भटनागर कतर एयरवेज में सीनियर केबिन क्रु हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उनकी सकुशल वापसी के लिए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से सहयोग के लिए अनुरोध किया था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के संबंधित अधिकारियों को केंद्र सरकार के संपर्क में रहते हुए मनीषा की सकुशल स्वदेश वापसी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए थे।

मुख्यमंत्री के कार्यकाल में मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग ने की 3,756 पदों पर भर्ती, पांज हजार 317 पदों के लिए 61 भर्ती प्रक्रिया जारी

हमारा स्वराज। भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कार्यकाल में अब तक मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग ने 3 हजार 756 पदों पर भर्ती की है। आयोग के अध्यक्ष डॉ. राजेश लाल मेहरा ने बताया कि दिसम्बर 2023 से अब तक जारी 75 विज्ञापनों में शामिल 4 हजार 492 पदों के लिये 3 हजार 756 उम्मीदवारों की नियुक्ति के लिए संबंधित विभागों को अनुशंसा पत्र भेजे गये हैं। आयोग ने 81 भर्ती विज्ञापन जारी किए हैं। इनके माध्यम से आगामी महीनों में 5 हजार 562 पद भरे जाएंगे। वर्तमान में 5 हजार 317 पदों के लिए 61 भर्ती प्रक्रियाएं जारी हैं। आयोग जारी किये गए वार्षिक परीक्षा कैलेंडर का पालन करते हुए भर्ती प्रक्रिया को समयबद्ध तरीके से पूर्ण करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। उपर्युक्त सभी परिणाम मध्यप्रदेश शासन एवं उच्च न्यायालय के कुल विज्ञापित पदों में से 87% पदों के परिणाम घोषित करने के निर्देशों के अनुपालन में घोषित किए गए हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि एक संस्था के रूप में मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग ने प्रतिष्ठित सरकारी भूमिकाओं के लिए सबसे उपयुक्त और प्रतिभाशाली युवाओं की पहचान कर उनका चयन किया और राज्य की सेवा के प्रति अपने समर्पण को लगातार प्रदर्शित किया है। आयोग ने ऐसा करके राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सार्थक योगदान दिया है। इस तरह आयोग ने एक सक्षम और कुशल राज्य प्रशासन की आधारशिला के रूप में अपनी भूमिका को पुष्ट किया है।

आयोग के सचिव प्रबल सिपाहा ने बताया कि आयोग द्वारा उक्त अवधि में 3 राज्य सेवा परीक्षा - 2019, 2021, 2022 के लिए 1,109 पदों और 3 राज्य वन सेवा परीक्षा के लिए 200 पदों के लिए अंतिम चयन परिणाम घोषित किए गए। संबंधित विभागों को संस्तुतियां शीघ्र भेजी गईं, जिससे चयनित अभ्यर्थियों को विभिन्न विभागों में शीघ्र कार्यभार ग्रहण कराने में सुविधा हुई।

उपर्युक्त अवधि में राज्य सेवा परीक्षा के माध्यम से सामान्य प्रशासन एवं गृह विभाग को क्रमशः 72 डिप्टी कलेक्टर एवं 51 उप पुलिस अधीक्षक के पदों के लिए संस्तुतियां भेजी गईं। इसके अतिरिक्त इस परीक्षा के माध्यम से सहायक संचालक स्कूल शिक्षा विभाग के 132 पदों तथा मप्र वित्त सेवा के 22 पदों के लिए भी स्कूल शिक्षा एवं वित्त विभाग को संस्तुतियां की गईं। राज्य वन सेवा परीक्षा के अंतर्गत सहायक वन संरक्षक के 19 तथा वन क्षेत्रपाल एवं परियोजना क्षेत्र अधिकारी के 181 पदों के लिए वन विभाग को अनुशंसा पत्र भेजे गए। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में रेडियोलॉजी विशेषज्ञ के 7 पदों के लिए अनुशंसा भेजी गई। आयुष विभाग के लिए 17 विषयों में आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी के 543 तथा आयुष व्याख्याता के 71 पदों के लिए विभाग को अनुशंसा की गई। उच्च शिक्षा विभाग को सहायक प्राध्यापक परीक्षा 2022 के अंतर्गत 25 विषयों के 727 पदों के लिए अनुशंसा की गई।

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग भारतीय संविधान के अनुच्छेद 315 के तहत स्थापित एक संवैधानिक निकाय है। इसकी प्राथमिक जिम्मेदारी मध्यप्रदेश राज्य की विभिन्न सार्वजनिक सेवाओं में उम्मीदवारों की भर्ती के लिए एक स्वतंत्र, निष्पक्ष, न्यायसंगत और पारदर्शी चयन प्रक्रिया सुनिश्चित करना है। आयोग द्वारा चयनित और अनुशंसित उम्मीदवारों को मध्यप्रदेश सरकार के लगभग 48 सरकारी विभागों द्वारा एक अनिवार्य और कठोर प्रक्रिया के बाद नियुक्त किया जाता है। अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों को छोड़कर, मध्यप्रदेश सरकार के 55 जिलों और विभिन्न विभागों में सेवारत सभी राजपत्रित अधिकारियों का चयन किसी न किसी समय मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग के माध्यम से हुआ है। विगत कुछ वर्षों में मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग की उपलब्धियाँ वास्तव में सराहनीय रही हैं। आयोग द्वारा जारी किए गए भर्ती विज्ञापनों की संख्या, आयोजित परीक्षाएँ, घोषित परिणाम और उसके बाद नियुक्ति के लिए बड़े पैमाने पर की गई सिफारिशों ने अगले तीन से चार दशकों के लिए राज्य के विभागों की मानव संसाधन आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भोपाल में बीजेपी ऑफिस में बनाई प्रतीकात्मक जेल

आपातकाल के 50 साल पूरे होने पर संविधान पीछे लिए इंदिरा गांधी की तस्वीर लगाई

हमारा स्वराज। भोपाल

25 जून को देश में आपातकाल लगे 50 साल पूरे हो गए। 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल लगाया था। ऐसे में बीजेपी ने आज के दिन संविधान हत्या दिवस के रूप में आयोजन प्रदेशभर में किया। भोपाल में प्रदेश भाजपा कार्यालय में एक प्रतीकात्मक जेल बनाई गई है।

बीजेपी ऑफिस में बनाई गई प्रतीकात्मक जेल के सामने इंदिरा गांधी की फोटो लगाई है। इस फोटो में इंदिरा गांधी संविधान को अपने हाथों में पीछे छिपाए हुए नजर आ रहीं हैं। दूसरे तरफ लिखा है- कांग्रेस द्वारा लगाए गए आपातकाल के काले अध्याय का 50वां वर्ष।

संविधान संशोधन की जानकारी दी गई : बीजेपी कार्यालय में एक प्रदर्शनी लगाई गई है, जिसमें आपातकाल के दौरान किए गए संविधान संशोधनों को समझाया गया है।

38वां संशोधन : इसके पोस्टर में बताया गया है, सत्ता को जवाबदेही से मुक्त करने की चाल.... आपातकाल और राष्ट्रपति के फैसलों को न्यायिक समीक्षा से बाहर किया। घोषित आपातकाल को अंतिम रूप देने का प्रयास किया गया। कार्यपालिका को अदालती निगरानी से पूरी तरह मुक्त किया गया। नागरिकों के मौलिक अधिकारों की न्यायिक रक्षा की संभावना भी खत्म कर दी गई।

39वां संशोधन : इस संशोधन में प्रधानमंत्री के चुनाव को न्यायिक समीक्षा से

बीजेपी ऑफिस में लगी तस्वीर
इंदिरा ने पीछे छिपाया संविधान

बाहर किया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को पलटकर इंदिरा गांधी का चुनाव बचाने के लिए रातों-रात पारित किया गया। **6 अगस्त, बुधवार**: संशोधन लोकसभा में पेश किया गया। **7 अगस्त, गुरुवार**: अगले ही दिन पारित भी कर दिया गया।

8 अगस्त, शुक्रवार: एक दिन के भीतर ही राज्यसभा में पारित कर दिया गया।

9 अगस्त, शनिवार: कांग्रेस शासित राज्यों में विशेष सत्र बुलाकर जरूरी 50% विधानसभाओं से अनुमोदन प्राप्त किए गए।

10 अगस्त, रविवार: संशोधन को अंतिम रूप देने के लिए रविवार को भी राष्ट्रपति भवन खुला रहा।

बीजेपी नेताओं आपबीती सुनाई

प्रदर्शनी में राजनाथ सिंह, अरुण जेटली, जॉर्ज फर्नांडिस, लाल कृष्ण आडवाणी और अटल बिहारी वाजपेयी के साथ आपातकाल में किए गए दुर्व्यवहार और जेल के अनुभवों को बताते हुए पोस्टर लगाए गए हैं।

सिंधिया ने शेयर किया राजमाता सिंधिया के आपातकाल का वीडियो

केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने एक वीडियो एक्स पर शेयर करते हुए लिखा- मेरी पूज्य आजी अम्मा, श्रद्धेय राजमाता विजयाराजे सिंधिया जी ने राजपथ को त्याग कर लोकपथ की राह चुनी थी। लोकतंत्र और जनसेवा के प्रति उनकी निष्ठा ने भारतीय राजनीति को नई दिशा दी। आपातकाल के दिनों में भी लोकतंत्र की पुनर्स्थापना के लिए उन्होंने संघर्ष किया। तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने उन्हें कई तरह की यातनाएं दी और अत्याचार किए। उनको जेल में भी डाला गया - लेकिन वे न झुकीं, न दबीं और न टूटीं। लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान के सम्मान के लिए वह अडिग रहीं। उनके विराट व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विचार हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।

एम्स भोपाल में कैंसर मरीजों को जल्द मिलेगी दो बड़ी सुविधाएं

गामा नाइफ यूनिट और पेट स्कैन होगा शुरू

हमारा स्वराज। भोपाल

राजधानी स्थित एम्स लगातार स्वास्थ्य सुविधाओं में विस्तार कर रहा है। इसी कड़ी में अब यहां आने वाले कैंसर मरीजों के लिए दो बड़ी सुविधा शुरू होने जा रही है। जिनमें से प्रमुख है गामा नाइफ यूनिट और पेट स्कैन जांच दोनों ही सुविधा जल्द शुरू हो सकती है। गामा नाइफ यूनिट में मस्तिष्क में पनप रहे कैंसर का त्वरित इलाज हो सकेगा। इस तकनीक से ब्रेन ट्यूमर, ब्रेन कैंसर, ट्राइजेमिनल न्यूरलजिया और एकोस्टिक न्यूरोमा जैसी बीमारियों का सटीक इलाज किया जा सकता है। वही पेट स्कैन शुरू होने से 20 हजार तक की महंगी जांच सरलता से हो पाएगी। पेट स्कैन जांच की सुविधा मध्यप्रदेश के किसी भी सरकारी अस्पताल में नहीं है।

अब तक देश में केवल चार संस्थानों में है या सुविधा : एम्स भोपाल में बन रही गामा नाइफ यूनिट की लागत लगभग 85 करोड रुपए आएगी। देश में अब तक सिर्फ चार संस्थानों में ही यह तकनीक है। गामा नाइफ से इन्फेक्शन रेडियस मात्र 0.01 फीसदी ही रह जाता है। यही नहीं इससे 0.1 एमएम के क्षेत्र में भी रेडिएशन दिया जा सकता है। इसमें ब्रेन की खून ले जाने वाली शिरा को छेड़े बिना सीधे ट्यूमर के डीएनए को नष्ट करता है। इस मशीन को इंस्टॉल करने के जरूरी बंकर अक्टूबर तक तैयार होंगे।

गामा नाइफ एक अत्याधुनिक तकनीक

एम्स के डायरेक्टर डॉ. अजय सिंह ने बताया कि गामा नाइफ एक अत्याधुनिक तकनीक है। केंद्र सरकार के उपक्रम हाइट्स द्वारा इसे खरीदा जा रहा है। बंकर का निर्माण भी सीपीडब्ल्यूडी कर रहा है। काम 50 फीसदी हो गया है। जानकारी के लिए बतादें कि गामा नाइफ के लिए रेडिएशन फ्री बंकर बनाने के लिए जिम्मेदारी सीपीडब्ल्यूडी को दी गई थी, लेकिन, काम की रफ्तार धीमी होने के कारण अब यह काम एचएलएल इंझफ्रोटेक सर्विसेस लिमिटेड को दिया गया है।

20 हजार में होती है पेट स्कैन की जांच : कैंसर के ज्यादातर मरीजों को पेट स्कैन की जांच करानी पड़ती है। यह जांच काफी महंगी होती है। यह जांच भोपाल में लगभग 18 से 20 हजार में निजी अस्पतालों में की जाती है। किसी भी सरकारी हॉस्पिटल सुविधा नहीं होने से मरीजों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। एम्स भोपाल में जल्द ही यह जांच शुरू करने की तैयारी की जा रही है। पेट स्कैन शुरू करने की तैयारी अंतिम पड़ाव पर है।

सम्पादकीय

फिर भी भारत बेटों पर मोहित

देशकाल-परिस्थितियों और बदलती जरूरतों के अनुरूप वैश्विक स्तर पर एक सूक्ष्म, लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है। यह बदलाव लिंग प्राथमिकताओं को लेकर वैश्विक दृष्टिकोण में आ रहे परिवर्तन का है। जैसा कि हाल ही में 'द इकनॉमिस्ट' द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि लड़कों के प्रति सदियों पुराना झुकाव अब कम हो रहा है। दुनियाभर में, अतिरिक्त पुरुष जन्म की संख्या- जो वर्ष 2000 में 1.7 मिलियन तक अधिक थी, साल 2025 तक लगभग दो लाख तक गिर गई है। निस्संदेह, यह प्रजनन विकल्पों में एक अप्रत्याशित बदलावों का संकेत है। यहां तक कि दक्षिण कोरिया और चीन में, लिंग अनुपात सामान्य या यहां तक कि बेटी की पसंद के संकेत दिखाने लगा है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि इस बदलाव की असल वजह क्या है दरअसल, माता-पिता में यह धारणा बलवती होती जा रही है कि बेटियां उनकी ढलती उम्र में धीरे-धीरे अधिक विश्वसनीय देखभाल करने वाली साबित हो सकती हैं। उन्हें परिवार से गहरे तक जुड़े रहने की अधिक संभावना के रूप में देखा जाने लगा है। आज बेटियों को बेटों के मुकाबले बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शनकर्ता के रूप में देखा जा सकता है। तेजी से कामकाजी दुनिया का हिस्सा बनने के कारण वह आर्थिक रूप से स्वावलंबी होती जा रही है। बल्कि कई देशों में तो महिलाओं की बैचलर डिग्री की संख्या तक पुरुषों की तुलना में अधिक है। पश्चिमी देशों में गोद लेने और आईवीएफ के डेटा दिखाते हैं कि बेटियों को चुनने की दिशा में स्पष्ट झुकाव है। दरअसल, पश्चिमी देशों के एकल परिवारों में बेटे अपनी गृहस्थी बसाकर मां-बाप को उनके भाग्य पर छोड़ जाते हैं। ऐसा माना जाने लगा है कि बेटियां बेटों के मुकाबले में ज्यादा संवेदनशील होती हैं और जीवन के अंतिम पड़ाव में मां-बाप को सुरक्षा कवच प्रदान कर सकती हैं। जिसके चलते लोग बेटों के मुकाबले बेटियों को अपनी प्राथमिकता बनाने को तरजीह देने लगे हैं। वहीं भारत में परिस्थितियां एक जटिल तसवीर प्रस्तुत करती हैं। यूं तो सदियों से भारत का समाज पुत्र मोह की ग्रंथि से ग्रस्त रहा है। हालांकि, अब आधिकारिक आंकड़े बता रहे हैं कि देश में शिशु लिंग अनुपात दर में सुधार हुआ है। लेकिन लिंग चयन के लिये किए जाने वाले गर्भपात पर शासन व प्रशासन की कानूनी सख्ती और जागरूकता अभियानों के बावजूद परंपरागत रूप से समाज में गहरी जड़ें जमाने वाला बेटा मोह अब भी प्राथमिकता बना हुआ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5(2019-21) का सर्वे चिंता बढ़ाने वाला है। सर्वे के अनुसार, लगभग 15 फीसदी भारतीय माता-पिता अभी भी बेटियों की तुलना में बेटों की आकांक्षा रखते हैं। यही वजह है कि हरियाणा,पंजाब और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में विषम शिशु लिंगानुपात चिंता का विषय बना हुआ है। इसके अलावा, भारत में बेटी वरीयता, जहां यह मौजूद है, अक्सर सशर्त होती है।

हमले से बढ़ा वैश्विक सुरक्षा के लिए खतरा

गत सप्ताहांत अमेरिकी वायु सेना के बी-2 स्टेल्थ बम वर्षक विमानों ने ईरान के उन तीन ठिकानों पर हमले किए जो परमाणु हथियार कार्यक्रम से संबंधित हैं। फोर्दो, नतांज और इस्फहान नामक इन शहरों में ये परमाणु ठिकाने जमीन के बहुत नीचे स्थित हैं और इसलिए अधिकांश हमलों से सुरक्षित भी हैं। गत सप्ताह जब इजरायल ने ईरान के ठिकानों पर हमले शुरू किए तो यह माना जा रहा था कि जमीन के भीतर दबी ये परमाणु इकाइयां सुरक्षित हैं। केवल अमेरिकी बंकर बस्टर बम (जीबीयू-57) ही 60 मीटर की गहराई पर स्थित इन ठिकानों को नुकसान पहुंचाने में सक्षम थे। इस बात की काफी अटकलें थीं कि क्या अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प इजरायल के लगातार अनुरोधों पर आगे बढ़ेंगे और वह करने की कोशिश करेंगे जो उसके हवाई हमले नहीं कर सके। उन्होंने अपने चुनावी वादे में कहा था कि वह अमेरिका को किसी नई जंग में नहीं शामिल करेंगे लेकिन उन्होंने ईरान पर बमबारी को लेकर भी सकारात्मक रुख दर्शाते हुए कहा है कि अमेरिका लंबे समय से ईरान को लेकर नरमी बरत रहा है। उनका यह बयान खासतौर पर परमाणु प्रतिबंध समझौते को लेकर रहा जिसे उनके पूर्ववर्ती राष्ट्रपति बराक ओबामा ने आगे बढ़ाया था। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि इन हमलों से ईरान के परमाणु कार्यक्रम को एक दशक पीछे धकेलने जैसा वांछित परिणाम हासिल हुआ है अथवा नहीं। संवर्धित यूरेनियम की जिस छोटी सी मात्रा के लिए तथा और अधिक यूरेनियम संवर्धन की संभावना के चलते ये हमले किए थे, संभव है कि उसे पहले ही किसी नए ठिकाने पर पहुंचाया जा चुका हो, जो हमले से दूर हो। चाहे जो भी हो अगर ईरान की क्षमताओं को नियंत्रित करना प्राथमिकता थी तो भी ऐसे हमले को शायद ही जरूरी माना जा सकता हो। जंगी परमाणु हथियार के तत्व तैयार करना एक बात है और उसे इस तरह तैयार करना कि उसे मिसाइल के जरिये हमले में इस्तेमाल किया जा सके एकदम दूसरी बात है। इजरायल सार्वजनिक और निजी रूप से लंबे समय से यह कहता आ रहा है कि ईरान कुछ ही महीने में अपना परमाणु कार्यक्रम पूरा कर सकता है और इसे गंभीरता से लेने की जरूरत है। इस मौके पर अमेरिका एक बेलगाम महाशक्ति की तरह व्यवहार कर रहा है।

आपातकाल: स्वर्णिम लोकतंत्र का काला अध्याय

धर्मेन्द्र सिंह लोधी,
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
मध्यप्रदेश शासन
संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और संविधान लोकतंत्र का रक्षक, क्योंकि संविधान लोकतांत्रिक मूल्यों, मौलिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता की आधारशिला है, किंतु 25 जून 1975 से 31 मार्च 1977 तक का कालखंड ऐसा था, जब देश में सत्ताधारी नेताओं द्वारा इन सभी मूल्यों का गला घोंटा गया। संवैधानिक शब्दावली में इस कालखंड को आपातकाल कहा गया परंतु इतिहास में इसे 'स्वर्णिम लोकतंत्र के काले अध्याय' के रूप में जाना जाता है। इस अवधि में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए न केवल संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग किया, बल्कि नागरिक स्वतंत्रता और मौलिक अधिकारों को स्थगित करके भारतीय लोकतंत्र की आत्मा पर भी कुठाराघात किया।

1971 में श्रीमती इंदिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' के नारे पर भारी बहुमत से चुनाव अवश्य जीता, लेकिन 1975 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने रायबरेली से उनके निर्वाचन अवैध घोषित कर दिया और 6 वर्षों तक चुनाव लड़ने के लिये भी अयोग्य ठहरा दिया। उच्च न्यायालय के इस निर्णय ने श्रीमती इंदिरा गांधी के पद को खतरे में डाल दिया। अपनी सत्ता को बचाने की लाचारी और राजनीतिक वर्चस्व की भूख ने लोकतांत्रिक मूल्यों को ध्वस्त करते हुए श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल लागू कर दिया। आपातकाल का यह निर्णय किसी राष्ट्रीय संकट के कारण नहीं बल्कि श्रीमती गांधी की सत्ता लोलुपता से प्रेरित था। संविधान के अनुच्छेद 352 के तहत आंतरिक अशांति का बहाना बनाकर उन्होंने देश को आपातकाल के अंधकार में धकेल दिया।

संवैधानिक प्रावधानों के तहत देश में आपातकाल मंत्रिमंडल की अनुशंसा पर राष्ट्रपति द्वारा लागू किया जाना चाहिए, परंतु श्रीमती गांधी ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने 26 जून 1975 को सुबह 6:00 केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक बुलाकर मंत्रियों को बताया कि मध्यरात्रि के बाद से देश में आपातकाल लगा दिया गया है। कुल मिलाकर देश में आपातकाल लागू करने के बाद और देश को यह सूचना देने से पहले श्रीमती गांधी ने मंत्रिमंडल की महज औपचारिक सहमति प्राप्त की, जो उनकी तानाशाही को दर्शाता है। आपातकाल लागू करते ही इंदिरा गांधी की तानाशाही शुरू हो गई। उन्होंने देश में नागरिक स्वतंत्रता और मौलिक अधिकारों को स्थगित कर दिया।

श्रीमती गांधी द्वारा राष्ट्र वादी विचारधारा को कुचलने का कार्य किया। लोकतंत्र को बचाने के लिये प्रतिरोध करने वालों के विरूद्ध आपराधिक प्रकरण दर्ज किये गये। जनसंघ और अन्य विपक्षी दलों से जुड़े नेताओं को गिरफ्तार कर 'मीसा' अर्थात आंतरिक सुरक्षा कानून के तहत जेल में डाल दिया गया जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई, अटलबिहारी वाजपेई और लालकृष्ण आडवाणी जैसे अनेक वरिष्ठ नेताओं को जेल में बंद कर दिया गया। एक अनुमान के मुताबिक बिना सुनवाई के लगभग 01 लाख 40 हजार से अधिक लोगों को जेल में बंदकर दिया गया। लोकतंत्र की सबसे जरूरी विशेषता 'वैकल्पिक विचार' को श्रीमती इंदिरा गांधी ने राजद्रोह में बदल दिया।

आपातकाल में इंदिरा गांधी ने न्यायपालिका जो लोकतंत्र की रक्षा की अंतिम संस्था है, उसे भी झुकने पर मजबूर कर दिया। न्यायपालिका की स्वायत्तता को छीन ने का प्रयास किया गया। सत्ता की आलोचना करने वाले अखबारों को सेंसर कर दिया गया। अनेक समाचार पत्रों के छपने पर रोक लगा दी गई।यह प्रेस की स्वतंत्रता का सबसे भयावह क्षण था। संजय गांधी के मार्गदर्शन में चलाए जाने वाला 'नसबंदी अभियान' सरकारी आतंक का प्रतीक बन गया। व्यक्तिगत सत्ता स्थायित्व के लिए संविधान में प्रजातंत्र विरोधी संशोधन किए गए। न्यायपालिका की शक्ति को सीमित करने की कोशिश की गई। यह वास्तव में भारत के लोकतांत्रिक संतुलन को बिगाड़ने की एक बड़ी साजिश थी। आपातकाल के दौरान कांग्रेस ने 'इंदिरा इज इण्डिया एण्ड इण्डिया इज इंदिरा' जैसे नारों को प्रसारित किया जो इंदिरा गांधी की निरंकुशता, तानाशाही और संविधान विरोधी मानसिकता को दर्शाते हैं। आपातकाल के दौरान प्रसिद्ध कवि जी.एस. शिवरूद्रप्पा ने 'इस देश में' नामक एक कविता लिखी-

इस देश में
वीर पूजा, परिवार पूजा
खत्म होनी चाहिए,
लेकिन मेरी कुल देवी की तरफ कोई आंख न उठाए,
इस देश में
हर एक को अपना मुंह बंद रखना चाहिए
लेकिन उन्हें मेरे शब्द सुनने के लिए
अपने कान खुले रखना चाहिए

यह कविता देश में इंदिरा गांधी की तानाशाही और लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक मूल्यों पर किए गए वज्रपात को प्रदर्शित करतीहै।

आजकल कुछ विपक्षी नेता संविधान की प्रतियां हाथों में लेक रसंसद से सड़कों तक 'संविधान खतरे में है'और 'लोकतंत्र खतरे में है' के नारे लगा रहे हैं। राजनीतिक स्वार्थ के लिए संविधान और लोकतंत्र को खतरे में बताने वाले इन नेताओं को थोड़ा अतीत में झांकना चाहिए।राहुल गांधी को पीछे जाकर अपनी दादी इंदिरा के काले कारनामों को देखना चाहिए, कि किस तरह उनकी सत्ता की लालसा ने देश में लोकतांत्रिक और संवैधानिक मूल्यों की हत्या की थी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज देश विकास और प्रगति के नए आयाम को स्पर्श कर रहा है। दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। समावेशी विकास में लोकतंत्र की पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक विकास को प्रवाहित किया है। लोकतांत्रिक मूल्यों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए मोदी सरकार द्वारा जल जीवन मिशन, प्रधानमंत्री आवास, उज्ज्वला और जनधन जैसी योजनाओं को धरातल पर लागू किया गया है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए संवैधानिक प्रावधानों को स्थगित कर दिया था, वहीं प्रधानमंत्री मोदी ने संवैधानिक मूल्यों और प्रावधानों के अनुक्रम में धारा 370 को हटाने, जीएसटी लागू करने जैसे राष्ट्रीय हित के कार्यों को मूल रूप प्रदान किया है। आपातकाल लोकतांत्रिक इतिहास का एक ऐसा काला अध्याय है, जो हमें चेतावनी देताहै, कि सत्ता का केंद्रीकरण किस हद तक लोक स्वतंत्रता को कुचल सकता है।

आपातकाल इस बात की चेतावनी है, कि जब सत्ता की भूख विवेक पर हावी हो जाती है, तब लोकतंत्र खोखला हो जाता है। इंदिरा गांधी द्वारा लागू किया गया आपातकाल उनके राजनीतिक स्वार्थ और आत्ममुग्धता का प्रतीक था। वह एक समय था जब श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश की आत्मा को कुचलकर सत्ता की कुर्सी को बचाया था। इंदिरा गांधी ने आपातकाल लागू करके देश की जनता पर जो अत्याचार किया, उसका उत्तर जनता ने 1977 के चुनाव में कांग्रेस को सत्ता से बाहर करके दिया। जिससे यह स्पष्ट है कि आपातकाल भारत के स्वर्णिम लोकतंत्र में न केवल एक काला अध्याय है, बल्कि सत्ता के मद में चूर श्रीमती इंदिरा गांधी की तानाशाही का भी प्रतीक है।

कड़वाहट से मुक्ति के लिये सम्मानजनक अलगाव

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में, जहां रिश्ते जटिल होते जा रहे हैं, तलाक एक ऐसी सच्चाई है जिससे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। भारत में तलाक की प्रक्रिया अक्सर लंबी, तनावपूर्ण और आरोप-प्रत्यारोप से भरी होती है। यह न केवल पति-पत्नी बल्कि उनके बच्चों और परिवारों के लिए भी भावनात्मक और आर्थिक बोझ बन जाती है। पारंपरिक तलाक कानूनों में, तलाक तभी दिया जाता है जब एक पक्ष दूसरे पक्ष पर 'गलती' (जैसे व्यभिचार, क्रूरता, परित्याग) साबित करे। इसमें अक्सर एक लंबी और थकाऊ कानूनी लड़ाई शामिल होती है, जिसमें दोनों पक्षों को एक-दूसरे पर आरोप लगाने पड़ते हैं, जिससे कड़वाहट और दुश्मनी बढ़ती है। इसके विपरीत, 'नो-फॉल्ट' तलाक में, तलाक के लिए किसी भी पक्ष को दूसरे की गलती साबित करने की आवश्यकता नहीं होती। उन्हें बेवफाई, क्रूरता या परित्याग जैसे विशिष्ट कारणों को साबित करने की आवश्यकता नहीं होती। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि यदि विवाह अपरिवर्तनीय रूप से टूट गया है और सुलह की कोई संभावना नहीं है, तो दोनों पक्षों को सम्मानपूर्वक अलग होने की अनुमति दी जानी चाहिए। इसका मुख्य आधार 'अपरिवर्तनीय रूप से टूट चुका विवाह' होता है। ऐसे में, विकसित देशों के अनुभवों से सीखना महत्वपूर्ण हो जाता है, जहां 'नो-फॉल्ट' तलाक एक सफल मॉडल साबित हुआ है। विकसित देशों जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम और ऑस्ट्रेलिया में 'नो-फॉल्ट' तलाक ने कई सकारात्मक परिणाम दिखाए हैं। सबसे पहले, इसने तलाक की प्रक्रिया को काफी सरल और तेज बना दिया है। अदालती कार्यवाही कम होती है, जिससे समय और धन दोनों की बचत होती है। दूसरा, यह प्रक्रिया को कम विरोधी बनाता है। जब किसी एक पक्ष पर दोष नहीं लगाया जाता, तो कटुता और प्रतिशोध की भावना कम होती है, जिससे बच्चों के लिए बेहतर माहौल बनता है और भविष्य में सह-पालन की संभावना बढ़ जाती है। तीसरा, यह महिलाओं को सशक्त बनाता है। पारंपरिक तलाक कानूनों में अक्सर महिलाओं को अपनी स्थिति साबित करने के लिए अतिरिक्त बोझ उठाना पड़ता था, लेकिन 'नो-फॉल्ट' तलाक उन्हें इस बोझ से मुक्त करता है। भारत में वर्तमान में तलाक के लिए विभिन्न आधार उपलब्ध हैं और हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 के तहत आपसी सहमति से तलाक (धारा 13 बी) शामिल हैं। आपसी सहमति से तलाक 'नो-फॉल्ट' सिद्धांत के करीब है, लेकिन इसमें भी कुछ शर्तें और प्रतीक्षा अवधि शामिल है। भारत में तलाक से संबंधित मौजूदा कानून, जैसे कि हिंदू विवाह अधिनियम, अभी भी काफी हद तक 'फॉल्ट-आधारित' है।

हमारा स्वराज
भोपाल, गुरुवार, 26 जून 2025

अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद के स्थापना दिवस पर निकाली भव्य रैली

हनुमान चालीसा पाठ से गूंजा क्षेत्र

हमारा स्वराज। जैतहरी/अनूपपुर

अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद के स्थापना दिवस के अवसर पर शक्ति केंद्र बड़े बजरंगबली धाम, दैखल पयारी पाली में एक भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व जिला अध्यक्ष राजाबाबू शर्मा ने किया। इस मौके पर संभागीय महामंत्री अमित सिंह, जिला महामंत्री बाबूलाल सिंह, प्रीतम सिंह, जिला उपाध्यक्ष बाबूलाल जैसवाल सहित परिषद के कई पदाधिकारी व

कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत हनुमान चालीसा पाठ से हुई, जिससे वातावरण में भक्ति की अनूठी छटा बिखर गई। इसके बाद पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्थापना दिवस पर परिषद द्वारा भव्य रैली भी निकाली गई, जो दैखल, पयारी, फुनगा, बदरा जैसे आसपास के गांवों में निकाली गई। रैली में 'हिंदू एकता' और 'सांस्कृतिक जागरूकता' के नारों से क्षेत्र गूंज उठा। लोगों ने भी कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया, जिससे सामाजिक एकजुटता और राष्ट्रधर्म के प्रति जनमानस में सकारात्मक ऊर्जा का संचार देखने को मिला।

थाना चचाई का ऑपरेशन प्रहार : महाराष्ट्र की गाडी को पीछा कर रोका

महिला और उसके साथी को गांजे के साथ धरदबोचा

हमारा स्वराज। अनूपपुर

पुलिस अधीक्षक मोती उर रहमान के द्वारा सभी थाना प्रभारियों को अवैध मादक पदार्थ खरीदी / बिक्री एवं परिवहन करने वाले के विरुद्ध कार्यवाही करने का आदेश दिए। इसी कड़ी में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक इसरार मंसूरी, एसडीओपी सुमित केरकेट्टा के निर्देशन में तथा थाना प्रभारी चचाई के नेतृत्व में 24 जून को मुखबिर की खबर पर छापामार कार्रवाई की गई। पता चला कि छत्तीसगढ़ अनूपपुर तरफ से एक जाइलो सफेद रंग की महाराष्ट्र पासिंग कार में अवैध मादक पदार्थ गंजा परिवहन किया जा रहा है। इस पर दो अलग-अलग टीम अलग-अलग रास्तों पर तत्काल लगाया जाकर छत्तीसगढ़ अनूपपुर तरफ से आने वाले वाहनों की निगरानी की गई। इस दौरान अनूपपुर चचाई तरफ से एक सफेद रंग की जाइलो गाड़ी आते हुए दिखी जिसे टॉर्च दिखाकर रोकने का प्रयास रेस्क्यू तिराहा अमलाई में किया गया। लेकिन गाड़ी रेस्क्यू तिराहा से मीडिया रास रोड होते हुए भागने लगी, जिसका पीछा कर विजय ग्राउंड के पास गाड़ी रोकी गई।

कार क्रमांक MH-05- AX- 0937 के चालक सीट पर एक व्यक्ति एवं उसी के पास वाली सीट पर एक महिला बैठी हुई मिली, जिनका नाम पता पूछने पर चालक ने अपना नाम रिजवान पिता निजाम खान, निवासी नवी मुंबई तुरबा स्टेशन मस्जिद के पास थाना सानपाड़ा जिला थाना महाराष्ट्र एवं बगल में बैठी महिला ने अपना नाम शबाना अंजुम पति फारुक खान उम्र 35 साल निवासी मोमिनपुरा नासिर खान का मकान टीमकी पुलिस चौकी के पास थाना तहसील जिला नागपुर की होना बताया।

उपरोक्त दोनों संदेहियों के निशानदेही पर साक्षी एवं स्टाफ के समक्ष जाइलो कार की तलाशी ली गई तो कार में पुरानी गाड़ी के पार्ट्स गाड़ी के पेट्रोल टंकी खुला हुआ, स्टेरिंग खुला हुआ, साइलेंसर एक बैटरी ,एक नग फैन, एक प्लास्टिक का बम्फर, रिपेयरिंग रोड गियर बॉक्स आदि कुल कीमत 100000 तथा सामान के नीचे 01 बैग में कपड़े तथा 06 अलग-अलग बैग/थैला में कुल 14 पैकेट अवैध मादक पदार्थ गांजा पाया गया, जिसका वजन करने पर कुल 71 किलो 820 ग्राम, कुल कीमत 7,18,200 रुपए करीब एवं जाइलो कार क्रमांक MH-05- AX- 0937 कीमत 10 लाख रुपए, उपरोक्त समान ,गंजा, एवं वाहन की कुल कीमत 18,18,200रुपये मौके से संदेहियो से जब्त की गई।

जैतहरी पुलिस ने गांजे के साथ तस्कर को पकड़ा

हमारा स्वराज। जैतहरी/अनूपपुर

मुखबिर से सूचना मिली कि र कांजी हाउस के पास कुसुमहाई रोड के पास एक व्यक्ति सफेद रंग के झोला मे अवैध मादक पदार्थ गांजा बेचने के लिए रखा है। इस पर थाना जैतहरी पुलिस ने उक्त संदेही को घेरा बंदी कर पकड लिया। आरोपी ने अपना नाम ओमप्रकाश पिता स्व. बेसाहन यादव, निवासी ग्राम चांदपुर थाना जैतहरी जिला अनूपपुर का होना बताया। आरोपी के कब्जे से झोले में रखे पॉलीथिन से 377.54 ग्राम गांजा कीमत 1600 रुपए बरामद किया। उक्त कार्यवाही मे पुलिस अधीक्षकअनूपपुर मोती उर रहमान के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनूपपुर इसरार मंसूरी एवं अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) अनूपपुर सुमित केरकेट्टा के मार्गदर्शन मे थाना जैतहरी के थाना प्रभारी निरी. अमर वर्मा, उनि यू एन मिश्रा ,सउनि विनोद विश्वकर्मा, प्र आर 165 संतोष जायसवाल ,आर 312 मनीष सिंह तोमर की सराहनीय भूमिका रही ।

वहीं, तलाशी में शबाना अंजुम के पास रखा बैग में एक बड़ा और एक छोटा चाकू, 1200 रुपए और पांच एटीएम कार्ड, मोबाइ बरामद किया। आरोपियों के खिलाफ आर्म्स एक्ट में प्रकरण दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है।

उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी सुंद्रेश सिंह, उप निरीक्षक बीएल गौलिया, सहायक उप निरीक्षक महिपाल प्रजापति, सहायक उप निरीक्षक लालमणि, सहायक उप निरीक्षक नागेश सिंह, सहायक उप निरीक्षक रावेंद्र तिवारी, प्रधान आरक्षक विकास दहाय, प्रधान आरक्षक अशोक बर्मन, प्र.आर. मनोज, प्र.आर. हेमसिह, आरक्षक नितेश, आरक्षक राकेश, आरक्षक दीपक, आरक्षक प्रकाश, आरक्षक अभय राज, प्रकाश, गुरूप्रसाद एवं महिला आरक्षक सावित्री सिंह की विशेष भूमिका रही है।

टोल प्लाजा पर तोडफोड करने वाले 7 आरोपी पकड़ाए

बिना टोल टैक्स दिए निकलने की कोशिश, विरोध करने पर हंगामा किया था

हमारा स्वराज। सीहोर

सीहोर के अमलाहा टोल प्लाजा पर तोड़फोड़ और मारपीट के मामले में कार्रवाई करते हुए 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आष्टा पुलिस ने घटना में इस्तेमाल किए गए तीन वाहन भी जब्त कर लिए हैं। घटना 23 जून की है। टोल बूथ कर्मचारी अभिषेक कुमार की शिकायत के अनुसार, शाम 5 बजे एक दूध से भरी पिकअप (MP 37 L 1607) का चालक बिना टोल टैक्स दिए जबरन निकलने लगा। विरोध करने पर चालक ने 20-22 साथियों को बुला लिया।

आरोपियों ने लोहे की रॉड और फावड़े से टोल बूथ में तोड़फोड़ की। सीसीटीवी कैमरे, हाईवे पेट्रोलिंग वाहन और ऑफिस गेट को नुकसान पहुंचाया। कर्मचारियों के साथ मारपीट भी की।

एसडीओपी आष्टा आकाश अमलकर के अनुसार, थाना प्रभारी गिरीश दुबे के नेतृत्व में पुलिस टीम ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की पहचान की। पुलिस ने जयपाल मेवाड़ा, विशाल उर्फ वीरसिंह मेवाड़ा, संजय कुशवाह, अमन राठौर, रोहित परमार, गब्बर राजपूत और राहुल ठाकुर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने घटना में इस्तेमाल किए गए तीन वाहन पिकअप MP 37 L 1607, महिंद्रा जायलो कार MP 04 VA 6628 और महिंद्रा स्कॉर्पियो MP 42 C 0890 को जब्त किया है। मामले में अन्य आरोपियों की पहचान कर ली गई है और जल्द ही उन्हें भी गिरफ्तार किया जाएगा।

मदनपुरा स्कूल की छत का गिरा प्लास्टर, दो छात्राएं घायल

हमारा स्वराज। सागर

सागर में रहली विकासखंड के शासकीय प्राथमिक शाला मदनपुरा में क्लास रूम की छत का प्लास्टर गिर गया। घटना में दो छात्राएं घायल हुईं, जिनका रहली स्वास्थ्य केंद्र में इलाज कराया गया है। इलाज के बाद छात्राओं को घर भेज दिया गया।

घटनाक्रम की सूचना मिलते ही एसडीएमगोविंद दुबे घटनास्थल पर पहुंचे और मामले की जानकारी ली। अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण कर कारणों को जाना। प्राथमिक जांच में सामने आया कि जिस क्लास में प्लास्ट गिरा है, वहां कुछ दिन पहले भी प्लास्टर गिर चुका था। इसके बावजूद संस्था प्रभारी ने उसी कक्ष में अध्यापन कार्य कराया।

विद्यालय के स्थल निरीक्षण में यह भी पता चला कि बीआरसी रहली में पदस्थ उपयंत्री राजेंद्र वैध द्वारा समय पर सचेत नहीं किया गया और घटनास्थल का निरीक्षण भी नहीं किया गया। जबकि पिछले कुछ दिनों से लगातार बारिश हो रही है। बारिश के कारण भवन जीर्ण-शीर्ण हो रहे हैं। ऐसे में उपयंत्री को भवन को जीर्ण-शीर्ण चिह्नित कर अध्यापन के उपयोग के लिए प्रतिबंधित करना था, लेकिन ऐसा नहीं किया गया।

कक्षा 1 से 8वीं तक की गतिविधियों का संचालन बीआरसी आरडी अहिरवार द्वारा किया जाता है। उनके द्वारा भी निरीक्षण नहीं करने के कारण यह घटना हुई। कलेक्टर संदीप जीआर ने जिला शिक्षा अधिकारी अरविंद जैन, जिला परियोजना अधिकारी गिरीश मिश्रा, बीआरसी आरडी अहिरवार, प्रभारी सहायक यंत्री पीके दास, उपयंत्री जनपद शिक्षा केंद्र रहली राजेंद्र वैध, प्रधानाध्यापक शासकीय प्राथमिक शाला मदनपुरा रश्मि बनवारिया को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। कलेक्टर ने नोटिस में कहा कि सभी अधिकारियों द्वारा इन निर्देशों का पालन नहीं किया गया। नोटिस में तीन दिन में जवाब मांगा गया है।

उदयगिरि की पहाड़ियों में तेंदुए की आशंका से दहशत

ग्रामीण बोले- तेंदुए के शावक दिखे, वन विभाग का दावा- वाइल्ड कैट है

हमारा स्वराज। विदिशा

विदिशा के उदयगिरि की पहाड़ियों पर तेंदुए की मौजूदगी की खबरों से आसपास के गांवों में डर का माहौल बन गया है। ग्रामीणों का कहना है कि उन्होंने न केवल तेंदुए को पहाड़ी पर घूमते देखा, बल्कि उसके दो शावकों की भी मौजूदगी देखी है। इससे आशंका जताई जा रही है कि तेंदुए का पूरा परिवार अब यहीं डेरा डाले हुए है।

करीब 15 दिन पहले स्थानीय लोगों ने पहाड़ी क्षेत्र में तेंदुए की हलचल देखी थी। इस पर वन विभाग ने हाई क्वालिटी नाइट विजन कैमरे लगाए थे, जिनमें एक तेंदुआ रिकॉर्ड भी हुआ। ग्रामीणों का दावा है कि तेंदुए ने बकरियों का शिकार भी किया है। इलाके में डर इस कदर है कि लोग अंधेरा होते ही घरों में दुबकने को मजबूर हैं।

गोशाला पर विशेष सतर्कता : विशेष चिंता श्री विद्यासागर गौशाला को लेकर जताई जा रही है, जो पहाड़ी के पीछे स्थित है। यहां करीब एक हजार से अधिक गाय और बछड़े हैं। गौशाला प्रबंधन ने सुरक्षा के अतिरिक्त इंतजाम किए हैं और रात में निगरानी बढ़ा दी गई है।

वन विभाग ने तेंदुआ होने से किया इनकार

हालांकि, वन मंडल अधिकारी हेमंत यादव का कहना है कि क्षेत्र में पहले एक 8-10 साल का तेंदुआ देखा गया था, जो अब यहां से जा चुका है। हाल ही में लगाए गए कैमरों में तेंदुए की कोई गतिविधि दर्ज नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण जिस जानवर को तेंदुआ समझ रहे हैं, वह संभवतः वाइल्ड कैट हो सकती है।

जंगल में प्रवेश पर रोक, चौकीदारों को निर्देश

वन विभाग ने जंगल के चारों ओर लोगों की आवाजाही पर रोक लगा दी है। क्षेत्र में तैनात चौकीदारों को सख्त निर्देश दिए गए हैं कि कोई भी व्यक्ति पहाड़ी के अंदर न जाए। अधिकारी ने लोगों से अपील की है कि वे जंगल से दूर रहें, ताकि न वन्यजीवों को खतरा हो और न ग्रामीणों को किसी अनहोनी का डर रहे।

छत ढलाई कर रहे 3 मजदूरों की करंट से मौत, 4 लोगों की हालत गंभीर

हमारा स्वराज। रायसेन

रायसेन जिले के सिलवानी के बम्होरी थाना क्षेत्र के ग्राम पड़रिया कला में बुधवार को करंट लगने से 3 मजदूरों की मौत हो गई। चार की हालत गंभीर है, उन्हें सिलवानी अस्पताल लाया गया है। मजदूर मकान के छत की ढलाई कर रहे थे। दोपहर करीब 3 बजे सभी मजदूर लिफ्ट मशीन को धक्का लगाने के लिए पहुंचे, तभी वह बिजली तारों की चपेट में आकर झुलस गए। हादसे में तीन मजदूरों राजेश, आजाद और रूपा की जान चली गई।

मशीन में धक्का लगा रहे थे मजदूर

जानकारी के अनुसार ग्राम पड़रिया कला में जमना केवट के पक्के घर में छत डालने के बाद मसाला बनाने वाली लिफ्ट मशीन को निकालते समय बिजली मशीन को धक्का लगाने वाले मजदूर 7 मजदूर को बिजली करंट लग गया। मशीन मालिक मनमोद अहिरवार, कुंडाली सहित मजदूरों को बम्होरी हॉस्पिटल लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार बाद इलाज हेतु सिलवानी हॉस्पिटल लाया गया है।

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए विशेष ओरिएंटेशन कार्यक्रम

हमारा स्वराज । बड़वानी

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना के अंतर्गत बुधवार को पाटी के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एक दिवसीय उन्मुखीकरण (ओरिएंटेशन) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विकासखंड की चयनित पंचायतों को बाल हितैषी पंचायत के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्यरत स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को महत्वपूर्ण कानूनी और सामाजिक विषयों पर प्रशिक्षित करना था।

कार्यक्रम में यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य, बाल अधिकार, बाल संरक्षण, एवं लैंगिक भेदभाव जैसे संवेदनशील विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। प्रशिक्षण में पाटी ब्लॉक के सीएचओ, एएनएम एवं महिला पर्यवेक्षकों ने सहभागिता की।

इस अवसर पर विकासखंड चिकित्सा अधिकारी पाटी, परियोजना अधिकारी पाटी, बीपीएम पाटी, ममता-यूनिसेफ से तकनीकी विशेषज्ञ शैलेश बैरागी, तथा आकांक्षी ब्लॉक फेलो कुलदीप द्विवेदी की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा किया गया, जबकि तकनीकी मार्गदर्शन ममता हेल्थ इंस्टिट्यूट फॉर मदर एंड चाइल्ड एवं यूनिसेफ द्वारा प्रदान किया गया।

मोहर्रम पर्व को शांति समिति की बैठक

हमारा स्वराज । महेश्वर

आगामी मोहर्रम पर्व के आयोजन को लेकर थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता थाना प्रभारी जगदीश गोयल ने की। बैठक में मुस्लिम समाज के सदर कदीर खान ने पर्व से जुड़ी परंपराओं एवं कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। कदीर खान ने बताया कि मोहर्रम की शुरुआत 26 जून 2025 को चांद रात से होगी। इस दिन परंपरा अनुसार मोमिनपुरा चौक से चौकी धुलाई यात्रा निकाली जाएगी। 27 जून को दलालपुरा से चादर निकाली जाएगी, जो पारंपरिक मार्ग से होती हुई काली मस्जिद तक पहुंचेगी। 1 से 7 जुलाई तक विभिन्न अखाड़ों मौला अली, अलबेला, हैदरी और रंगीला अखाड़ा द्वारा करतब और जुलूस निकाले जाएंगे। 6 जुलाई को नगर में ताजियों का जुलूस निकलेगा, जबकि 7 जुलाई को उनका विसर्जन किया जाएगा। पूरे मोहर्रम पर्व के दौरान जगह-जगह लंगर, शरबत और भंडारे के स्टॉल भी लगाए जाएंगे। बैठक में पर्व के सफल आयोजन के लिए पानी, बिजली, सफाई और सुरक्षा जैसी व्यवस्थाओं की मांग रखी गई। इस अवसर पर मुस्लिम समाज से नायब सदर नासिर अंसारी, मालिक खान, राजिक शेख, आरिफ खान, त्योहार कमेटी सदर सादिक शेख, यूसुफ खान, निजामु खत्री, शरीफ बाबा, मुस्तकीम शेख, फिरोज लोहार, शाकिर अंसारी, वहीं मनोज पाटीदार और उपाध्यक्ष सचिन शर्मा उपस्थित रहे। नगर परिषद, विद्युत विभाग और हॉस्पिटल से भी संबंधित अधिकारी बैठक में मौजूद रहे।

भाजपा ने आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने पर संविधान हत्या दिवस के रूप में याद किया, मीसाबंदियों का सम्मान किया

कांग्रेस ने आपातकाल थोपकर की थी लोकतंत्र की हत्या

हमारा स्वराज । उज्जैन

कांग्रेस ने 25 जून 1975 को देश पर आपातकाल थोपकर लोकतंत्र व संविधान की हत्या की थी। यह स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे विवादास्पद व अलोकतांत्रिक कार्य था। इंदिरा गांधी ने न सिर्फ चुनाव स्थगित किए वरन आम जनता के मौलिक अधिकारों पर भी रोक लगा दी। इंदिरा गांधी के राजनीतिक विरोधियों को कैद कर लिया गया और प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। स्वतंत्र भारत के इतिहास में कांग्रेस ने कई बार लोकतंत्र की हत्या की है।

यह बात उच्च शिक्षा मंत्री इंदरसिंह परमार ने "25 जून 1975 लोकतंत्र का काला दिवस, कभी न भूलने वाला आपातकाल" संविधान हत्या दिवस आपातकाल के काले अध्याय के 50 वर्ष पर भाजपा कार्यालय लोकशक्ति भवन में आयोजित पत्रकार वार्ता में कही। उन्होंने कहा कि संविधान की कॉपी लेकर घूमने वालों ने ही सबसे ज्यादा संविधान की हत्या करने का काम किया है। भाजपा मीडिया प्रभारी दिनेश जाटवा के अनुसार आपातकाल दिवस पर भाजपा कार्यालय पर पत्रकार वार्ता के बाद केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर, उच्च शिक्षा मंत्री इंदरसिंह परमार, विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा सहित जनप्रतिनिधियों ने प्रदर्शनी का शुभारंभ किया । इसके बाद भाजपा कार्यालय पर विरोध स्वरूप 50 काले गुब्बारे छोड़े गए। आपातकाल के विरोधस्वरूप भाजपा कार्यकर्ताओं ने काले वस्त्र पहने और विरोध दर्ज किया ।

भाजपा द्वारा लोकतंत्र सेनानियों का सम्मान समारोह कार्यक्रम आस्था गार्डन में आयोजित किया गया। अतिथियों द्वारा लोकतंत्र सेनानीयों का शाल श्रीफल से सम्मान किया गया।

इंदिरा गांधी ने नो वकील, नो अपील, नो दलील का रवैया अपनाया

उच्च शिक्षा मंत्री इंदरसिंह परमार ने कहा 1971 में समाजवादी नेता राजनारायण रायबरेली से इंदिरा गांधी के सामने लोकसभा चुनाव हार गए थे। इस पर राजनारायण ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में इंदिरा गांधी के निर्वाचन को चुनौती देते हुए चुनाव में बड़े पैमाने पर सरकारी मिशनरी के दुरूपयोग, तय सीमा से अधिक पैसे खर्च करने व मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए गलत तरीकों का उपयोग करने के आरोप लगाए थे। 12 जून 1975 को उच्च अदालत ने आरोपों को सही ठहराते हुए अपने फैसले में इंदिरा गांधी के निर्वाचन को अवैध घोषित कर उन्हें छह वर्ष के लिए चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित किया था। इंदिरा गांधी ने कोर्ट के आदेश को मानने से इंकार कर दिया। मनमानी करते हुए आधी रात को तत्कालीन राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद से अध्यादेश पारित करवाकर देश में आपातकाल लगा दिया। तत्पश्चात कांग्रेस सरकार ने सरकार विरोधियों को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। पूरे भारत में एक लाख चालीस हजार लोगों को सामाजिक, राजनीतिक कार्यकर्ता व नेताओं को झूठे आरोपों में जेल में ठूंस दिया गया। आपातकाल में गिरफ्तारी पर कोर्ट नहीं जा सकते थे। इंदिरा गांधी ने नो वकील, नो अपील, नो दलील का रवैया अपनाया। अंततः 21 महीने की अवधि पश्चात 21 मार्च 1977 को आपातकाल समाप्त हुआ।

कार्यक्रम को भाजपा नगर अध्यक्ष संजय अग्रवाल, विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा, महापौर मुकेश टटवाल, निगम सभापति कलावती यादव, वीरेंद्र कावड़िया, पारस जैन, रूप पमनानी, इकबालसिंह गांधी, राजेंद्र भारती, जगदीश पंचाल, मुकेश यादव, आनंदसिंह खींची, रवि सोलंकी, दिनेश जाटवा, राकेश पंड्या, अनिल शिंदे, ऋषि वर्मा, प्रमिला यादव, सोनल जोशी, प्रियंका सेंगर, घनश्याम राठौर सहित कार्यकर्ता पदाधिकारी उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम प्रभारी योगेश सांगते ने किया । आभार मनोज मालवीय ने माना।

सुधांशु त्रिवेदी ने किए बाबा महाकाल के दर्शन

हमारा स्वराज । उज्जैन

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सदस्य सुधांशु त्रिवेदी ने बुधवार को उज्जैन में श्री महाकालेश्वर मंदिर पहुंचकर भगवान महाकाल के दर्शन किए और पूजन अर्चना की। इस अवसर पर उन्होंने आपातकाल को भारत के लोकतांत्रिक इतिहास का एक दुखद और काला अध्याय बताते हुए कहा कि यह केवल संवैधानिक व्यवस्था पर हमला नहीं था, बल्कि भारत की मूल सोच पर भी आघात था। सुधांशु त्रिवेदी ने कहा, 'हमारे देश को, जिसे हम सबने मां माना है, भगवान राम, भगवान कृष्ण, भगवान बुद्ध और भगवान महावीर ने पुण्य भूमि माना है, उसे एक नेता के बराबर तौला गया था। यह भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान पर चोट करने वाला था।

फिट फ्लेक्स जिम के अवैध निर्माण पर कार्रवाई

हमारा स्वराज । उज्जैन

उच्च न्यायालय इंदौर द्वारा पारित आदेश के क्रम में नानाखेड़ा पेट्रोल पंप के पास स्थित हर्षदीप टावर भवन की चौथी मंजिल पर संचालित फिट फ्लेक्स जिम के संचालक तेजस उपाध्याय द्वारा टावर के ओपन भाग पर अवैध निर्माण करते हुए जिम का संचालन किया जा रहा था। न्यायालय के आदेश पर बुधवार को जोन क्रमांक 06 के भवन अधिकारी लक्ष्मण प्रसाद साहू एवं भवन निरीक्षक मुकुल मेश्राम द्वारा नगर निगम रिमूवल गैंग के साथ अतिक्रमण हटाया गया। इस दौरान सहायक आयुक्त प्रदीप सेन, प्रकाश विभाग प्रभारी जितेंद्र पाल सिंह जादौन, स्वास्थ्य अधिकारी आनंद विजय सिंह राठौड़, गैंग प्रभारी मोनू थनवार उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री मोहन यादव के प्रयास से कतर में फंसी मनीषा परिवार के पास आई

हमारा स्वराज । उज्जैन

मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव के प्रयास से दोहा के कतर में फांसी एयरवेज केबिन क्रू मेंबर मनीषा भटनागर अपने परिवार के पास पहुंची है। इससे पूर्व प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने फोन पर उनसे चर्चा भी की थी। 12 दिनों से इजरायल और इराक के बीच युद्ध चल रहा था। सीजफायर के बाद युद्ध विराम हुआ है। इस युद्ध में कतर के दोहा में केबिन क्रू मेंबर कम करने वाली मनीष भटनागर भी फंस गई थी। दोनों देशों के बीच हुए धरने की लाइव तस्वीर देखकर वह भी डरी-सहमी थी। इसी दौरान उन्होंने पति से फोन पर चर्चा कर वहां की स्थिति बताई। इसके बाद पति ने प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री से पत्नी को वापस लाने का आग्रह किया था। बुधवार को कॉपर से वह उज्जैन अपने अभिषेक नगर स्थित ससुराल पहुंची। जहां उनकी सास में नजर उतार कर टिकी लगाकर गृह प्रवेश करवाया। इस दौरान पूरा परिवार काफी खुश दिखाई दिया। मीडिया से चर्चा में उन्होंने बताया कि वहां की स्थिति बहुत ही भयावह थी सभी लोग डरे सहमे थे। गृह मंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को उन्होंने धन्यवाद दिया जिनकी मदद के बाद ही वे उज्जैन सुरक्षित पहुंची है।

परमवीर चक्र कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव ने किया श्री श्याम हॉस्पिटल के नए भवन का शुभारंभ

हमारा स्वराज । धार

शहर में 2 वर्षों से संचालित श्री श्याम हॉस्पिटल के नए भवन, जिसमें अत्याधुनिक सुविधाओं का इजाफा हुआ है का शुभारंभ मुख्य अतिथि कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव (परमवीर चक्र) एवं धार विधायक नीना विक्रम वर्मा की गरिमामय उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता धार के वरिष्ठ चिकित्सक डॉक्टर एके चौधरी ने की। अति-विशिष्ठ अतिथि के रूप में पूर्व कैबिनेट मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव, जिला पंचायत धार के अध्यक्ष सरदार सिंह मैडा, भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेष भारती एवं भाजपा ग्रामीण जिलाध्यक्ष चंचल पाटीदार, सरदारपुर के पूर्व विधायक वेलसिंह भुरिया एवं मनावर विधायक डॉ. हीरालाल अलावा सम्मिलित हुए।

विशिष्ठ अतिथि के रूप में धार नर्सिंग होम एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. कमलसिंह चौहान, मित्तल हॉस्पिटल धार के संचालक डॉ. उमेश मित्तल एवं महाजन हॉस्पिटल के संचालक डॉ. एमएम महाजन की उपस्थिति रही। श्री श्याम हॉस्पिटल के प्रतिनिधि मेडिकल डायरेक्टर डॉ. आशीष डामोर एवं सर्जिकल डायरेक्टर डॉ. संजय राठौर व संचालिका डॉ. रश्मि पाटीदार भी मंचासिन रहे।

कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव, धार विधायक नीना वर्मा, राजवंधन सिंह दत्तीगॉव एवं डॉ. ए.के.चैधरी सहित समस्त अतिथियो ने फिता खोलकर श्री श्याम हॉस्पीटल के नये भवन का शुभारंभ करते हुए मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित करके हॉस्पिटल का अवलोकन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में अतिथियों का स्वागत डॉ. रश्मि पाटीदार, डॉ. आशीष चैहान, आदर्श सिंह ठाकुर, सतीश ठाकुर, पिंकिसिंह ठाकुर, मोनिका चैहान, काजलसिंह ठाकुर, अनुरागसिंह ठाकुर, विनीत चौहान, शिवकांता चौहान, ख्याति चौहान, विजय पाटीदार, मनोज पवार, अमन सिंह ठाकुर, राजा भैया, डॉ. राजेन्द्र कुमार चंद्रावत, बीवर्षा, डॉ. आशा बिलवाल, अंजली राठौर, डॉ पिंकेश कुमावत, डॉ. अरुण बेनिवाल, प्रीति ठाकुर, विजय पाटीदार, मनोज पवार, मुन्ना व्यास, सुनीता मुवेल, डॉ. बलवंत बिश्नोई, सरदार अजनार, सुनील चौहान, बलराम परमार, यासिन खान, जगदीश, कमल नलवाया एवं कृष्णा सोलंकी आदि ने किया।

स्वागत भाषण देते हुए श्री श्याम हॉस्पिटल के प्रबंध संचालक डॉ. आशीष चौहान ने बताया कि हॉस्पिटल मे अत्याधुनिक तकनीकी व उपकरणों को लगाया गया है। मॉड्यूलर ऑपरेशन थियेटर बनाए गए हैं। मरीजों को जोड़-प्रत्यारोपण एवं किडनी ट्रांसप्लांट जैसे जटील ऑपरेशन सहित लेप्रोस्कॉपीक सर्जरी की सुविधाएं उपलब्ध हो सके। विद्यार्थियों ने दी नाट्य प्रस्तुति

श्री श्याम हॉस्पिटल के नए भवन के शुभारंभ के अवसर पर पधारे मुख्य अतिथि कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव परमवीर चक्र के धार पहुंचने पर शहर के प्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी विजयबहादुर सिंह ठाकुर के नेतृत्व में कैलाश नगर रहवासी संघ एवं केवलश्री टीम ने कैलाश नगर कॉलोनी गेट पर ढोल धमाके के साथ आतिशबाजी कर स्वागत किया गया।

कैप्टन यादव ने कहा कि कारगिल युद्ध के मार्मिक पल साझा करते हुए बताया कि उन्हें 17 गोलियां लगी, इसके बाद भी वे लड़ते रहे। उन्होंने बताया कि हिंदुस्तानी फौज का हर सिपाही अपनी मातृभूमि की रक्षा करने के लिए हर पल अपने प्राणों की आहुति देने के लिये तैयार रहता है। उन्होंने बताया कि जिस तरह सरहदों की रक्षा के लिए फौजी जरूरी है, उसी तरह लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिये चिकित्सक एवं आधुनिक उपकरणों से लैस हॉस्पिटल होना भी बहुत जरूरी है। धार के श्री श्याम हॉस्पिटल की व्यवस्थाओं से मुझे विश्वास है कि धारवासियों के लिए एक सौगात साबित होगा। क्योंकि मैंने जंग मे घायल होने के बाद उपचार के दौरान चिकित्सकों को दूसरे भगवान एवं हॉस्पिटल को मंदिर के रूप में देखा है।

धार विधायक नीना विक्रम वर्मा एवं पूर्व केबीनेट मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव ने कहा कि श्री श्याम हॉस्पिटल की सुविधाएं आम जनता के लिए सुगम हो इसलिये इस हॉस्पिटल को मुख्यमंत्री उपचार योजना से जोडने के लिये शासन स्तर पर प्रयास एवं सहयोग करेंगे।

भाजपा जिलाध्यक्ष निलेश भारती, चंचल पाटीदार, सरदार सिंह मेडा, डॉ. हीरालाल अलावा एवं डॉ. ए.के.चौधरी सहित मंचासीन समस्त अतिथियों ने श्री श्याम हॉस्पिटल के भवन व उपकरणों का अवलोकन कर संतोष व्यक्त करते हुये डॉ. आषीष चौहान, डॉ रश्मि पाटीदार, आदर्श सिंह ठाकुर एवं विनीत चौहान को बधाई देते हुये उज्जवल भविष्य की कामना दी।

धार शहर में अपनी सेवाएं अर्पित करने वाली समाजसेवी हेमा जोशी एवं हॉस्पिटल शुभारंभ कार्यक्रम में पधारे महू के जनपद अध्यक्ष सरदार मालवीय उनके साथ भोपाल के शिक्षाविद डॉक्टर अवधेश शर्मा, मोहम्मद आवेश कुरैशी का सम्मान अतिथियों ने किया। धार में चिकित्सा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले चिकित्सकों डॉ. बीआर पाटीदार, डॉ. उमेश मित्तल, डॉ. एमएम महाजन, डॉ. सुरेश चौहान, डॉ. के.एस. चौहान, डॉ. ए.के. चौधरी, डॉ. रितेश पाटीदार, डॉ. आशीष डामार, डॉ. संजय राठौर, डॉ. पुष्पेंद्र साहणे, डॉ. सौरभ सिसोदिया, डॉ. गरिमा अश्क, डॉ. कोमल मेलवानी, डॉ. आकाशदीप सिंह चौहान, डॉ. वी.के.शर्मा, डॉ. दीप्ति चैहान सहित अन्य चिकित्सकों का अतिथियों द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम के पश्चात आभार धार के युवा उद्योगपति आदर्श विजय सिंह बहादुर ठाकुर ने माना। कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव के आने से जाने तक का आतिथ्य प्रवीण सिंह देवडा (पिंटु फोजी) द्वारा किया गया।

अष्टम पुण्यतिथि पर हीरु भाई की प्रतिमा पर किया माल्यार्पण

हमारा स्वराज । बड़वानी

यह जीवन केवल स्वयं की उदर पुर्ती के लिए नहीं बना है मनुष्य एक स्वस्थ मस्तिष्क के साथ इस पृथ्वी पर जन्मा है। इसलिए उसे संपूर्ण जीव जगत का ख्याल रखने के साथ-साथ पीड़ित वंचित शोषित वर्ग के लिए भी यथासंभव सेवा और सहयोग प्रदान करना चाहिए। ऐसे ही कुछ उदगार सदैव स्वर्गीय हीरूभाई से सुनने को मिलते रहते थे। उनके पास आने वाले हर एक व्यक्ति को वह सहयोग प्रदान करते थे तथा कभी भी उनके पास से कोई खाली हाथ नहीं लौटा है। आशाग्राम ट्रस्ट के संस्थापक पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय हीरु भाई की अष्टम पुण्यतिथि पर आशाग्राम स्थित उनकी प्रतिमा पर उन्हें उनके पुत्र दीपक शर्मा व परिजनों एवं स्नेहीजनों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

ISPL से जुड़ा सलमान खान का नाम

हमारा स्वराज। नई दिल्ली

आईएसपीएल यानी इंडियन स्ट्रीट प्रीमियर लीग से अब बॉलीवुड सुपर स्टार सलमान खान का नाम भी जुड़ गया है।

ISPL ने बुधवार को ऐलान किया कि खान उसकी नई फ्रेंचाइजी नई दिल्ली के मालिक होंगे। ये लीग टेनिस बॉल से खेली जाती है और इसमें 10-10 ओवर के मैच होते हैं। आईएसपीएल की कोर कमिटी में सचिन तेंदुलकर, एशियन क्रिकेट काउंसिल के सदस्य आशीष शेलार, मिनाल अमोल काले और सूरज सामत हैं। ISPL का दूसरा सीजन काफी हिट रहा था। उसे टीवी पर 2.8 करोड़ से ज्यादा दर्शकों का प्यार मिला था। पहले सीजन के मुकाबले दूसरे सीजन में टीवी व्यूअरशिप में 47 प्रतिशत का इजाफा देखने को मिला था। अब लीग में दो और फ्रेंचाइजी जुड़ी रही हैं। नई दिल्ली का तो ऐलान हो चुका है। दूसरी फ्रेंचाइजी अहमदाबाद का औपचारिक ऐलान भी आने वाले दिनों में हो सकता है और उसका भी मालिक कोई सेलिब्रिटी होगा। आईएसपीएल में पहले से ही बॉलीवुड का जबरदस्त तड़का लगा हुआ है। इसकी टीमों के मालिकों में अमिताभ बच्चन, सैफ अली खान, करीना कपूर खान, अक्षर कुमार, सूर्या, ऋतिक रोशन और राम चरण जैसे फिल्म स्टार हैं। अब इस लिस्ट में सलमान खान का नाम भी जुड़ गया है। ISPL की कोर कमिटी केसदस्य सचिन तेंदुलकर ने कहा कि, आईएसपीएल के पिछले दो सीजन को देशभर में फैंस और शुभचिंतकों का बहुत सपोर्ट और प्यार मिला। ये निश्चित रूप से उन खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाता है जो अलग-अलग पृष्ठभूमि से आते हैं और कठिन मेहनत करते हैं। नए सीजन में नई टीम जोड़कर जाना और नए फैन और सपोर्टर लाएगा।

गावस्कर ने दी शार्दुल को इलवेन से हटाने की सलाह

हमारा स्वराज। नई दिल्ली

शार्दुल ठाकुर की बतौर ऑलराउंडर भारतीय टेस्ट टीम में 2 साल के बाद वापसी हुई और इंग्लैंड के खिलाफ उन पर भरोसा दिखाते हुए टीम मैनेजमेंट ने उन्हें प्लेइंग इलेवन में खेलने का मौका भी दिया, लेकिन उनके खराब प्रदर्शन ने सबको निराश किया। अब टीम इंडिया के पूर्व कप्तान व ओपनर बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने उन्हें एजबेस्टन में खेले जाने वाले दूसरे टेस्ट मैच के लिए प्लेइंग इलेवन से बाहर करने की मांग की है। शार्दुल ठाकुर ने घरेलू स्तर पर बेहतरीन प्रदर्शन करने के बाद टेस्ट टीम में जगह बनाई थी और माना जा रहा था वो कुछ अच्छा करेंगे, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया और वो गेंद व बल्ले दोनों से ही फेल रहे। पहले टेस्ट की पहली पारी में उन्होंने 6 ओवर में 38 रन देकर कोई विकेट नहीं लिया। इसके बाद दूसरी पारी में दो विकेट लिए जिसमें बेन डकेट और हैरी ब्रूक दोनों अहम मौके पर आउट हो गए लेकिन वो इस प्रदर्शन को बाद में जारी नहीं रख पाए। बल्लेबाजी के लिहाज से टीम में उनका योगदान अच्छा नहीं रहा और इसके बाद ये सवाल उठता है कि क्या टीम में उनकी जगह वाजिब है या फिर टीम इंडिया अपने गेंदबाजी आक्रमण को बेहतर बनाने के लिए किसी विशेषज्ञ गेंदबाज पर विचार कर सकता है। गावस्कर ने सुझाव दिया कि बर्मिंघम की पिच पर बाएं हाथ के रिस्ट स्पिनर कुलदीप यादव को मदद मिल सकती है और उन्होंने इस चाइनामैन गेंदबाज को दूसरे टेस्ट के लिए टीम में चुनने का समर्थन किया। गावस्कर ने मैच के बाद स्टार स्पोर्ट्स पर कहा कि चाहे जसप्रीत बुमराह फिट हों या नहीं मुझे लगता है कि कुलदीप यादव कोटीम में आना चाहिए। मेरा मानना है कि उन्हें शार्दुल ठाकुर की जगह टीम में आना चाहिए क्योंकि बर्मिंघम की पिच ऐसी होगी जहां कलाई के स्पिनर को थोड़ी मदद मिलेगी। उन्होंने इस बात का भी जिक्र किया कि साई सुदर्शन और करुण नायर दोनों पर कड़ी नजर रखने की जरूरत है साथ ही वाशिंगटन सुंदर जैसे खिलाड़ी को प्लेइंग इलेवन में शामिल करने से गेंदबाजी अटैक में कुछ वैरिएशन आ सकती है जो काफी साधारण दिख रही है।

रैंकिंग: ऋषभ पंत और बेन डकेट ने को बड़ा फायदा

हमारा स्वराज। नई दिल्ली

बुधवार को आईसीसी ने टेस्ट प्लेयर्स की ताजा रैंकिंग जारी की है। भारत के स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत को इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में दो शतक जड़ने के बाद फायदा हुआ है। वह एक स्थान ऊपर चढ़कर सातवें पर पहुंच गए हैं। पंत के खाते में फिलहाल 801 रेटिंग अंक हैं। ये उनके करियर की बेस्ट रेटिंग है। वह टेस्ट में 800 रेटिंग तक पहुंचने वाले पहले भारतीय विकेटकीपर हैं। उन्होंने लीड्स टेस्ट की पहली पारी में 134 और दूसरी पारी में 118 रन बनाए थे। वह जिम्बाब्वे के एंडी फ्लावर के बाद एक टेस्ट की दोनों पारियों में सेंचुरी मारने वाले दूसरे विकेटकीपर हैं। वह ये कमाल करने वाले कुल सातवें भारतीय हैं। भारत के कप्तान शुभमन गिल और इंग्लैंड के ओपनर बेन डकेट ने बल्लेबाजों की सूची में एक जैसी छलांग लगाई है। दोनों को पांच-पांच स्थानों का लाभ मिला है। जहां गिल 20वें जबकि डकेट आठवें पायदान पर पहुंच गए हैं। गिल (147) नेलीड्स की पहली पारी में शतक जमाया था। डकेट ने पहली पारी में अर्धशतक और दूसरी पारी में सेंचुरी ठोकी। उनकी 149 रनों की पारी के दम पर मेजबान इंग्लैंड ने 371 का टारगेट आसानी से चेज कर लिया था।

गोल्डन स्पाइक टूर्नामेंट जीतने के बाद भी खुश नहीं है नीरज चोपड़ा

हमारा स्वराज। नई दिल्ली

भारत के स्टार जैवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ओस्ट्रावा गोल्डन स्पाइक टूर्नामेंट जीतने के बाद भी खुश नहीं हैं। नीरज ने 85.29 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ 9 खिलाड़ियों के बीच खीता अपने नाम किया है। ये वही टूर्नामेंट है जिसे नीरज के कोच और वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर जेन जेलेज्नी ने अपने करियर में 9 बार जीता है। उन्होंने 1986 से 2006 के बीच खिताब हासिल किए। नीरज ने जीत के बाद कहा कि, मैं अपने प्रदर्शन से खुश नहीं हूं लेकिन इस बात की खुशी है कि खिताब जीता। मैं बचपन से ये टूर्नामेंट देखा करता था। मैंने जेलेज्नी और उसेन बोल्ट जैसे दिग्गजों को गोल्डन स्पाइक जीतते देखा और मुझे लगता था कि मैं भी एक दिन जीतूंगा। वह सपना सच हो गया है। मुझे पता है कि चेक गणराज्य में भालाफेंक काफी लोकप्रिया है। दर्शकों से हमें अपार समर्थन मिला । काश मैं और बेहतर प्रदर्शन कर पाता। नीरज ने इस टूर्नामेंट में फाउल के साथ शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने दूसरे प्रयास में 83.45 मीटर का थ्रो किया। दूसरे दौर के बाद नीरज तीसरे स्थान पर थे। तीसरे दौर में 85.29 मीटर के थ्रो के साथ वह शीर्ष पर आए। उनके अगले दो थ्रो 82.17 मीटर और 81.01 मीटर के रहे, जबकि आखिरी थ्रो फाउल रहा। पिछले दो सत्र में वह यहां फिटनेस कारणों से खेल नहीं सके थे। 27 वर्ष के चोपड़ा ने इस सत्र में मई में दोहा डायमंड लीग में 90 मीटर की बाधा पार करके दूसरा स्थान हासिल किया। इसके बाद पेरिस डायमंड लीग खिताब जीता। नीरज 2018 में आईएएएफ कांटिनेंटल कप में एशिया प्रशांत टीम का हिस्सा थे और 80.24 मीटर के थ्रो के साथ छठे स्थान पर रहे थे।

व्यापार

वेनिस में Jeff Bezos और Lauren की 'गुपचुप' शादी

हमारा स्वराज। नई दिल्ली

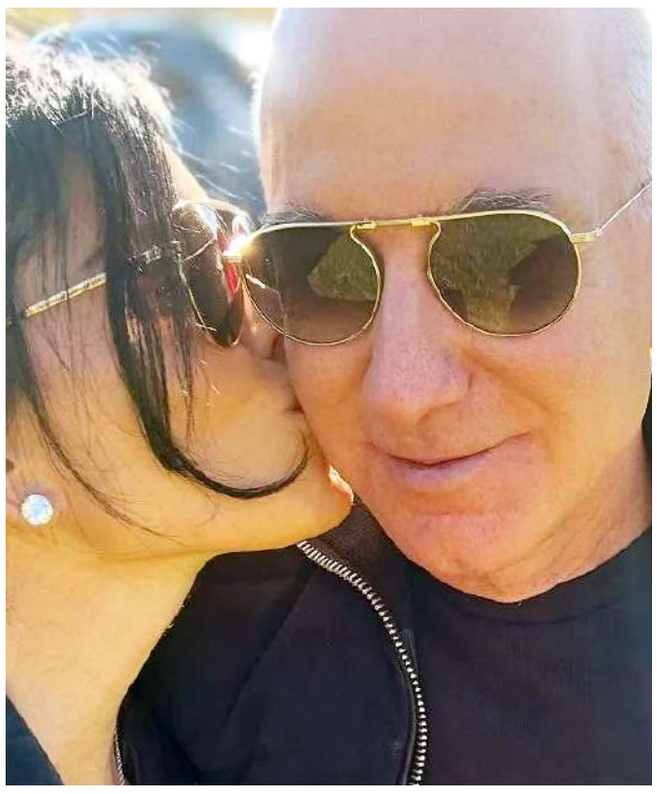

अमेजन के संस्थापक जेफ बेजोस और पत्रकार लॉरेन सांचेज वेनिस में आयोजित एक निजी और भव्य समारोह में एक-दूसरे को 'आई डू' कहने वाले हैं। दोनों अपनी शादी को लेकर चुप हैं, उनके प्रवक्ताओं ने भी इस खबर पर कुछ नहीं कहा है, लेकिन अफवाहों का दौर जारी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, शादी में शामिल होने वाले मेहमानों से एनडीए साइन करवाया गया है, ताकि बेजोस और सांचेज की शादी से जुड़ी कोई जानकारी बाहर न जा सके। इस मशहूर जोड़े की शादी को 'वेनिस में हुई अब तक की सबसे भव्य शादियों में से एक' और 'सदी की शादी' कहा जा रहा है, लेकिन क्यों? जेफ और लॉरेन की शादी की सही तारीख का खुलासा नहीं किया गया है, लेकिन यह जोड़ा 27 जून को शादी करने वाला है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, शादी का जश्न 25 से 30 जून तक चलने वाला है। एक टैक्सी ड्राइवर ने बताया कि उसे 25-30 जून को 'बड़ी शादी' के लिए बुक कर लिया गया है और शहर के गोंडोला, वॉटर टैक्सी और नौका बंदरगाह सभी को बड़े दिन के लिए बंद कर दिया गया है। शादी के बारे में ज़्यादातर जानकारी गुप्त रखे जाने के बावजूद, यह पता चला है कि जेफ और लॉरेन की शादी में लगभग 46.5-55.6 मिलियन डॉलर खर्च होने वाले हैं। वेनेटो क्षेत्रीय अध्यक्ष लुका ज़िया के अनुसार, समारोह की पूरी लागत 40-48 मिलियन यूरो (लगभग 46.5-55.6 मिलियन डॉलर) के बीच होने की उम्मीद है। मंगलवार को वेनिस में निजी विमान पहुंचने शुरू हो गए हैं। इवांका ट्रंप और जेरेड कुशनर शादी में शामिल होने वाले सबसे सजे-धजे मेहमानों में से हैं। उनके अलावा, किम कार्दशियन, कैटी पेरी, क्रिस जेनर और ईवा लॉन्गोरिया भी शादी में शामिल होंगे, ये सभी लॉरेन की बैचलरेट पार्टी का भी हिस्सा थे। जेफ और लॉरेन की शादी में ओपरा विनफ्रे, मिक जैगर जैसी हस्तियां शामिल हो सकती हैं।

शादी का विरोध कर रहे स्थानीय लोग?

जेफ बेजोस और उनकी पार्टनर लॉरेन सांचेज को पर्यावरण समूहों और स्थानीय लोगों के विरोध का सामना करना पड़ रहा है। ये लोग उनके बड़े जहाजों से होने वाली परेशानी का विरोध कर रहे हैं। 'नो स्पेस फॉर बेजोस' नाम के एक ग्रुप ने दावा किया है कि उनके विरोध और नहर बंद करने की धमकियों के कारण, बेजोस की एक पार्टी को शहर से दूर एक शिपयार्ड में ले जाना पड़ा।ग्रीनपीस जैसे संगठनों ने पूरे शहर में बैनर लगाकर अमीर मेहमानों के आने से होने वाली संभावित परेशानियों पर अपनी नाराजगी जताई है। आयोजकों ने कहा है कि वे शहर में कम से कम परेशानी चाहते हैं, लेकिन फिर भी तनाव बना हुआ है। तनाव कम करने के लिए, जेफ बेजोस ने वेनिस के लैगून पर रिसर्च करने वाले एक वैज्ञानिक समूह को €1 मिलियन (लगभग ₹9 करोड़) दान दिए हैं। स्थानीय अध्यक्ष ने इसे बेजोस की तरफ से 'प्यार और जिम्मेदारी' का संकेत बताया है।

जियो को लॉन्च करना लाइफ का सबसे बडा रिस्क

हमारा स्वराज। नई दिल्ली

देश के सबसे अमीर बिजनेसमैन मुकेश अंबानी ने कहा है कि रिलायंस जियो को लॉन्च करना मेरे जीवन का सबसे बड़ा जोखिम था। अंबानी ने ये बात 25 जून को मैकिन्से एंड कंपनी को दिए इंटरव्यू में कही।

अंबानी ने कहा हम मानते हैं कि इंसान खाली हाथ आता है और खाली हाथ जाता है, पीछे सिर्फ एक संस्था (इंस्टिट्यूशन) छोड़ता है। मेरे पिता ने मुझसे कहा था कि रिलायंस एक प्रक्रिया है। ये एक ऐसी संस्था है जो बनी रहनी चाहिए। तुम्हें ये सुनिश्चित करना है कि रिलायंस तुम्हारे और मेरे बाद भी चले। अंबानी ने कहा मैंने अपने बोर्ड को बताया था कि जियो को लॉन्च करना अब तक का सबसे बड़ा जोखिम था। उस समय हम अपनी खुद की रकम लगा रहे थे, और मैं सबसे बड़ा शेयरहोल्डर था। कुछ विश्लेषकों का मानना था कि भारत सबसे उन्नत डिजिटल तकनीक के लिए तैयार नहीं है, इसलिए जिओ का बुरा हाल हो सकता था। लॉन्चिंग के बाद हमें ज्यादा रिटर्न न मिलने का रिस्क था। अंबानी ने कहा हम मानते हैं कि दिन के अंत में, आप इस दुनिया में बिना कुछ लिए आते हैं और बिना कुछ ले जाए छोड़ जाते हैं। आप जो पीछे छोड़ते हैं, वो एक संस्था है। मेरे पिता ने मुझसे कहा, रिलायंस एक प्रक्रिया है। ये एक ऐसी संस्था है जो बनी रहनी चाहिए। तुम्हें ये सुनिश्चित करना है कि रिलायंस तुम्हारे और मेरे बाद भी चले। मैंने अपने पिता से वादा किया है कि रिलायंस हमेशा बनी रहेगी। 2027 में रिलायंस अपनी गोल्डन जुबली मनाएगी। मैं चाहता हूं कि रिलायंस भारत और मानवता की सेवा 100 साल पूरे होने के बाद भी करती रहे।

नाकामयाबी मंजूर थी

मैंने बोर्ड को बताया, सबसे खराब स्थिति में हमें ज्यादा रिटर्न नहीं मिलेगा। ये ठीक है क्योंकि ये हमारा अपना पैसा है। लेकिन फिर भी, रिलायंस के लिए भारत में ये सबसे बेहतरीन परोपकार होगा, क्योंकि हम भारत को डिजिटल बनाएंगे और इसे पूरी तरह बदल देंगे।

रुपया 13 पैसे की बढ़त के साथ 85.92

हमारा स्वराज। नई दिल्ली

इजराइल और ईरान के बीच तनाव समाप्त होने की उम्मीद तथा घरेलू शेयर बाजारों की मजबूत शुरुआत के बीच रुपया बुधवार को शुरुआती कारोबार में 13 पैसे की बढ़त के साथ 85.92 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि और विदेशी पूंजी की निकासी ने हालांकि स्थानीय मुद्रा के लाभ को सीमित कर दिया।

अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 86.00 प्रति डॉलर पर खुला। फिर 85.92 प्रति डॉलर पर पहुंच गया, जो पिछले बंद भाव से 13 पैसे की बढ़त दर्शाता है। रुपया मंगलवार को करीब पांच साल में सबसे अधिक एकल दिवसीय बढ़त दर्ज करते हुए 73 पैसे चढ़कर 86.05 पर बंद हुआ था। वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड वायदा कारोबार में 1.30 प्रतिशत की बढ़त के साथ 68.01 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। इस बीच, छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 प्रतिशत की मामूली बढ़त के साथ 97.91 पर रहा। घरेलू शेयर बाजार में बीएसई सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 426.79 अंक चढ़कर 82,481.90 अंक पर पहुंच गया जबकि निफ्टी 123.25 अंक की बढ़त के साथ 25,167.60 अंक पर रहा। शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशक मंगलवार को बिकवाल रहे थे और उन्होंने शुद्ध रूप से 5,266.01 करोड़ रुपये के शेयर बेचे।

सेंसेक्स में शुरुआती कारोबार में तेजी

नई दिल्ली। ईरान और इजराइल के बीच युद्ध विराम के बाद पश्चिम एशिया में तनाव कम होने के संकेतों के बीच वैश्विक बाजारों में तेजी के बीच सेंसेक्स और निफ्टी में बुधवार को शुरुआती कारोबार में तेजी दर्ज की गई। बीएसई सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 426.79 अंक चढ़कर 82,481.90 अंक पर पहुंच गया। एनएसई निफ्टी 123.25 अंक की बढ़त के साथ 25,167.60 अंक पर रहा। सेंसेक्स में शामिल 30 कंपनियों में से टाइटन, एचसीएल टेक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, अल्ट्राटेक सीमेंट, हिंदुस्तान यूनिलीवर और टाटा स्टील के शेयर ज्यादा लाभ में रहे। कोटक महिंद्रा बैंक और आईसीआईसीआई बैंक के शेयर नुकसान में रहे। एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, हांगकांग का हैंगसेंग और चीन का शंघाई एसएसई कम्पोजिट फायदे में रहे।

हमारा स्वराज
भोपाल, गुरुवार, 26 जून 2025

एसडीएम ने किया ग्राम चुरारी एवं निदानपुर नल-जल योजना का निरीक्षण

देखी हर घर जल की जमीनी हकीकत

हमारा स्वराज। चंदेरी

कलेक्टर के आदेशानुसार जल जीवन मिशन के अंतर्गत पंचायतों को हस्तांतरित नल जल योजनाओं के सुचारू रुप से संचालन के लिए एसडीएम शुभ्रता त्रिपाठी की अध्यक्षता में गठित टीम द्वारा ग्राम निदानपुर एवं ग्राम चुरारी की नल जल योजनाओं का निरीक्षण किया गया। एसडीएम द्वारा निरीक्षण के दौरान योजना के समस्त अवयवों की जानकारी ली गई तथा योजना से लाभान्वित सभी ग्राम वासियों से चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि ग्राम में नियमित रूप से ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल प्रदाय करें।साथ ही ग्राम वासियों से पानी की आपूर्ति के संबंध में जानकारी ली। भ्रमण के दौरान एसडीएम ने ग्रामीणों से आग्रह किया कि समय समय पर पानी को उबालकर पीने एवं पानी की जांच करने के साथ-साथ पानी के उपचार करने की समझाइस दी।भ्रमण के दौरान तहसीलदार दिलीप दरोगा, प्रभारी सहायक यंत्री पीएचई धर्मान्शु दीक्षित, विकास खंड समन्वयक अविनाश गौस्वामी वं ग्राम के सरपंच और सचिव उपस्थित रहे।

सुनीं ग्रामीणों की समस्याएं

विधायक हरिबाबू ने किया ग्रामों का भ्रमण

हमारा स्वराज। अशोकनगर

विधानसभा क्षेत्र के विधायक हरि बाबू राय गत दिवस अशोकनगर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों का दौरा कर ग्रामीणों की समस्याओं को नजदीक से जाना। अपने भ्रमण के दौरान उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को मौके से ही आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। सबसे पहले विधायक ग्राम काकाखेड़ी पहुँचे, जहाँ उन्होंने ग्रामीणों से सीधे संवाद कर बिजली से जुड़ी समस्याओं की जानकारी ली। उन्होंने मौके पर ही विद्युत विभाग के अधिकारियों से चर्चा कर समस्याओं का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके पश्चात वे विजयपुरा ग्राम पहुँचे, जहाँ उन्होंने समस्त ग्रामवासियों के साथ मिलकर डीपी के लिए उपयुक्त स्थान का जायजा लिया और जल्द कार्यवाही का आश्वासन दिया। अपने दौरे के अंतिम चरण में वे झीला ग्राम पहुँचे, जहाँ उन्होंने पूरे गाँव का भ्रमण किया तथा स्थानीय लोगों के साथ जनसंवाद करते हुए उनकी समस्याओं को सुना। इस दौरान ग्रामीणों ने पेयजल, सड़क और कृषि से जुड़ी चुनौतियों को भी साझा किया। विधायक ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि उनकी समस्याओं के समाधान हेतु वे हरसंभव प्रयास करेंगे और शासन-प्रशासन से समन्वय कर आवश्यक कार्रवाई कराएंगे।

राजनीतिक महत्वाकांक्षा को पूरा करने लगाया आपातकालः बिरथरे

अशोकनगर। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपनी राजनीतिक महत्वकांक्षा को पूरा करने, सत्ता पर काबिज रहने और प्रजातंत्र को कुचलने के लिए देश में आपातकाल लगाया 25 जून 1975 को तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा लगाए गए आपातकाल की 50वीं बरसी पर बुधवार को स्थानीय अग्रवाल पैलेस में भाजपा द्वारा पत्रकार वार्ता, संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आपातकाल को काला दिवस बताते हुए कांग्रेस पर लोकतंत्र का गला घोंटने का आरोप लगाया गया। पत्रकार वार्ता में मुख्य वक्ता के रूप में भाजपा के पूर्व विधायक एवं प्रदेश कार्यसमिति सदस्य नरेंद्र बिरथरे, भाजपा जिलाध्यक्ष आलोक तिवारी, नगर पालिका अध्यक्ष एवं कार्यक्रम प्रभारी नीरज मनोरिया,चंदेरी विधायक जगन्नाथ सिंह रघुवंशी, जिला महामंत्री रविंद्र लोधी,जिला मीडिया प्रभारी डॉ हरवीर सिंह रघुवंशी तथा पार्टी के अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी मौजूद रहे। पूर्व विधायक नरेंद्र बिरथरे ने आपातकाल को कांग्रेस का राष्ट्र और संविधान विरोधी निर्णय बताया। उन्होंने कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने राजनीतिक महत्वाकांक्षा के चलते अपने पद को बचाने के लिए देशभर में आपातकाल थोप दिया, जिसके तहत करीब 1 लाख 40 हजार लोगों को जेल में डाला गया। श्री बिरथरे ने कहा कि कांग्रेस ने तुष्टीकरण के लिए संविधान का दुरुपयोग करते हुए 39वां संशोधन किया।

निरीक्षणः आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों को मीनू अनुसार नहीं मिल पा रहा था भोजन

कलेक्टर ने दिए स्व-सहायता समूह की अध्यक्ष को हटाने के निर्देश

हमारा स्वराज। अशोकनगर

कलेक्टर आदित्य सिंह ने बुधवार को अशोकनगर जिले के विभिन्न क्षेत्रों का सघन दौरा कर आंगनवाड़ी केंद्रों, स्वास्थ्य केंद्रों, स्कूलों और प्रसिद्ध करीला धाम का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने व्यवस्थाओं में कमी पाए जाने पर कई अधिकारियों और समूहों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए।

कलेक्टर सिंह ने सबसे पहले मुंगावली तहसील के ग्राम मल्हारगढ़ का भ्रमण किया। यहां उन्होंने आंगनवाड़ी केंद्र क्रमांक 1, 2, 3 और 4 का निरीक्षण किया और बच्चों की जानकारी, वजन पंजी तथा हाइट पंजी का अवलोकन किया। कुपोषित बच्चों और नाश्ते व भोजन की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया। बच्चों को मेनू के अनुसार नाश्ता और भोजन न देने पर दुर्गा स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष को हटाने के निर्देश दिए गए। आंगनवाड़ी केंद्र क्रमांक 03 की खराब हालत को देखते हुए उसे दूसरी जगह स्थानांतरित करने के निर्देश सीईओ जनपद पंचायत को दिए गए। आंगनवाड़ी केंद्र क्रमांक 01 में शौचालय न होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए सचिव निरंजन सिंह राजपूत की दो वेतन वृद्धि रोकने के निर्देश दिए गए। ग्रामीणों द्वारा पानी की समस्या बताए जाने पर कलेक्टर ने रोजगार सहायक पद्म सिंह का 15 दिन का वेतन काटने का निर्देश दिया। मल्हारगढ़ में ही उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और शासकीय आयुर्वेदिक औषधालय का भी निरीक्षण किया। उन्होंने विभिन्न कक्षों में पंजियों का अवलोकन किया और नर्सिंग स्टाफ बढ़ाने के निर्देश दिए ताकि मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें। आयुर्वेदिक औषधालय में अनुपस्थित पाए गए डॉ. मनोज श्रीवास्तव को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर ने ग्रामीणों से मुलाकात कर बिजली, सड़क और पानी सहित मूलभूत सुविधाओं की जानकारी ली और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। भ्रमण के दौरान, कलेक्टर आदित्य सिंह ने मुंगावली सिविल अस्पताल का भी विस्तृत निरीक्षण किया। उन्होंने अस्पताल की स्वास्थ्य व्यवस्थाओं का बारीकी से जायजा लिया और चल रहे मरम्मत कार्य के संबंध में एसडीएम मुंगावली को आवश्यक निर्देश दिए। सीसीटीवी कैमरों का अवलोकन किया और पैथोलॉजी लैब का निरीक्षण करते हुए मरीजों के नमूनों की जांच रिपोर्ट समय पर उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। एनआरसी वार्ड के भ्रमण के दौरान कुपोषित बच्चों का कैलेंडर तैयार करने के निर्देश दिए गए। अस्पताल में अनुपस्थित पाए गए अकाउंटेंट गोपाल गोस्वामी को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए।

मां जानकी धाम परिसर भी पहुंचे कलेक्टर

कलेक्टर सिंह ने अशोकनगर जिले के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल मां जानकी माता मंदिर करीला धाम का निरीक्षण किया। मंदिर परिसर में पर्याप्त साफ-सफाई न मिलने पर उन्होंने नाराजगी व्यक्त की और यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि करीला धाम परिसर में समुचित साफ-सफाई बनी रहे। साफ-सफाई की कमी पाए जाने पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत मुंगावली आलोक इटोरिया को कारण बताओ नोटिस और ग्राम पंचायत सचिव अरविंद सिंह यादव की दो वेतन वृद्धि रोकने के निर्देश दिए गए। उन्होंने सीता रसोई की व्यवस्थाओं का अवलोकन किया और संचालन के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। नृत्यांगनाओं के बैठने के लिए समुचित व्यवस्थाएं करने और करीला मंदिर के सौंदर्यीकरण के लिए प्रोजेक्ट कार्ययोजना बनाने के निर्देश दिए। मंदिर में प्रसादी चढ़ाने के लिए अगरबत्ती और नारियल हेतु जगह चिन्हित कर स्टैंड बनाने के निर्देश भी दिए गए। इस निरीक्षण के दौरान मुंगावली एसडीएम मनीष धनगर और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत आलोक इटोरिया सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

आंगनबाड़ी में कराएं नल कनेक्शन

इसके बाद, कलेक्टर सिंह ने ग्राम बिल्हेरू का दौरा किया। यहां उन्होंने आंगनवाड़ी केंद्र क्रमांक 103 का निरीक्षण किया। बच्चों को समय पर नाश्ता और भोजन न मिलने पर देविका स्वयं सहायता समूह के अध्यक्ष को हटाने के निर्देश दिए गए। उन्होंने आंगनवाड़ी कार्यकर्ता से कुपोषित बच्चों, गर्भवती और धात्री महिलाओं की जानकारी ली और बच्चों की उपस्थिति, हाइट पंजी व वजन पंजी का अवलोकन किया। आंगनवाड़ी केंद्र में नल कनेक्शन कराने के निर्देश भी दिए गए। बिल्हेरू में ही शासकीय प्राथमिक विद्यालय का निरीक्षण करते हुए उन्होंने मध्याह्न भोजन के किचन शेड का अवलोकन किया और प्रवेशोत्सव व पुस्तकों के वितरण संबंधी जानकारी ली।

'एक दिन का विधायक'-पिछोर में लोकतंत्र की अनोखी मिसाल

हमारा स्वराज। पिछोर

जहां राजनीति अकसर सत्ता, शक्ति और प्रोटोकॉल के इर्द-गिर्द घूमती है, वहीं मध्य प्रदेश की पिछोर विधानसभा में एक अलग ही तस्वीर देखने को मिल रही है। यहां लोकतंत्र का ऐसा प्रयोग हो रहा है, जो न सिर्फ अनोखा है, बल्कि प्रेरणादायक भी। इस प्रयोग का नाम है – 'एक दिन का विधायक'। यह पहल किसी और ने नहीं, खुद क्षेत्रीय विधायक प्रीतम सिंह लोधी ने शुरू की है। उनके अनुसार, लोकतंत्र का मतलब केवल चुनाव जीतकर कुर्सी पर बैठ जाना नहीं है, बल्कि हर नागरिक को निर्णय प्रक्रिया में सहभागी बनाना है। इसी सोच के साथ उन्होंने एक संकल्प लिया – हर दिन एक आम आदमी विधायक बने और जनसुनवाई करे। पिछोर के सरकारी रेस्ट हाउस में रोज़ सुबह एक अनोखी तस्वीर देखने को मिलती है। वहां दो कुर्सियां होती हैं – एक पर बैठते हैं प्रीतम सिंह लोधी, और दूसरी पर बैठता है उस दिन का 'एक दिन का विधायक'। यह व्यक्ति कोई भी हो सकता है – एक किसान, मजदूर, महिला, युवा, छात्र या व्यापारी। उस आम नागरिक को न सिर्फ बैठने की जगह दी जाती है, बल्कि वह पूरे आत्मसम्मान के साथ जनता की समस्याएं सुनता है, सुझाव देता है और उन्हें हल कराने के लिए आदेश जैसी भूमिका में होता है। विधायक लोधी इस प्रक्रिया में सिर्फ मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। वे कहते हैं, 'जब तक जनता खुद नेतृत्व का अनुभव नहीं करेगी, तब तक लोकतंत्र सिर्फ चुनाव तक सीमित रहेगा।' यह नवाचार न सिर्फ प्रशासनिक कार्यप्रणाली को पारदर्शी बना रहा है, बल्कि आमजन को यह एहसास भी करा रहा है कि वे सिर्फ वोटर नहीं हैं – वे भी शासन का हिस्सा हैं। 'एक दिन का विधायक' योजना की गूंज अब पूरे प्रदेश में सुनाई देने लगी है। कई जगहों से सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार और राजनेता इस पहल को देखने पिछोर पहुंच रहे हैं। सोशल मीडिया पर इसकी खूब सराहना हो रही है।

सकवारा विद्यालय भवन मिला जर्जर हालत में पंचायत भवन में लगेगा स्कूल

एसडीएम ने किया निरीक्षण, लिया मध्यान भोजन का स्वाद

हमारा स्वराज। चंदेरी

चंदेरी एसडीएम सुभ्रता त्रिपाठी निरंतर शासकीय विभागों का निरीक्षण कर रही है। लगातार शासकीय कार्यों में कसावट लाने के साथ जन समुदाय को उचित और समय पर व्यवस्थित प्रशासनिक कार्यों का संचालन किया जाए इसी दृष्टिकोण को रखकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों का निरीक्षण अनुविभागीय अधिकारी ने किया।

इस दौरान तहसीलदार दिलीप दरोगा, बीईओ राजेश तिवारी, बीआरसीसी वेद प्रकाश गोयल मौजूद रहे। पीएम श्री हाई स्कूल प्राणपुर का निरीक्षण किया गया जिसमें निरीक्षण के दौरान विद्यालय से संबंध सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त पाई गईं। जहां पर अनुविभागीय अधिकारी ने स्कूल में अध्यनरत बच्चों के साथ मध्यान भोजन भी किया जबकि प्राथमिक विद्यालय नानकपुर की बिल्डिंग जीर्ण सीर्ण अवस्था में पाई गई जिसे देख एसडीएम ने तत्काल मरम्मत के निर्देश बीआरसी को दिए प्राथमिक विद्यालय सकवारा की बिल्डिंग का निरीक्षण करने के दौरान विद्यालय का भवन अत्यधिक स्थिति में जर्जर और किसी भी समय गिरने की स्थिति में मिला है, जिस पर संज्ञान लेते हुए तत्काल उक्त भवन में स्कूल न लगाने का आदेश मौके पर ही संबंधित विद्यालय की प्राचार्य सिया कुमारी को दिया गया। अब विद्यालय को पंचायत भवन में लगाया जाएगा। इस विद्यालय में मीनू के अनुसार मध्यान भोजन का वितरण भी नहीं मिला जिस पर अधिकारियों ने नाराजगी व्यक्त कर मीनू अनुसार विद्यार्थियों को मध्यान भोजन वितरण करने की निर्देश दिए तथा मध्यान भोजन वितरित करने वाले समूह को नोटिस जारी करने के निर्देश बीआरसी को दिए गए चुरारी विद्यालय निरीक्षण के दौरान पाया गया कि कुछ लोगों ने विद्यालय प्रांगण में अतिक्रमण कर लिया है उसे भी तत्काल हटाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए गए इस दौरान विद्यालयों से संबंधित प्राचार्य उपस्थित रहे।

गुणवत्ता में आएगा सुधारः अनुविभागीय अधिकारी अथवा किसी भी प्रशासनिक अधिकारी के द्वारा विद्यालयों के निरीक्षण लगातार किए जाने के कारण स्कूलों मे अध्ययनरत छात्रों की शिक्षा गुणवत्ता में सुधार आएगा स्टाफ की उपस्थिति समय पर सुनिश्चित होगी स्कूल बिल्डिंगों की जर्जर हालत और उनके रंग रोगन तथा मूलभूत सुविधाएं जो छात्र-छात्राओं को मिलना चाहिए उन सभी व्यवस्थाओं में भी सुधार होगा।

स्वामी वन टू वन मीडिया एंड कम्युनिकेशन के लिए मुद्रक/प्रकाशक जितेंद्र कोठारी द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप, 11 प्रेस कॉम्पलेक्स एमपी नगर, जोन-1, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित एवं 42, निर्मल एंक्लेव, जैन नगर, लाल घाटी, भोपाल (म.प्र.) -462030 से प्रकाशित। संपादक- मृदुल जैन*, आरएनआई नं. MPHIN/2012/43383, मो. 83570-89000, Email: hamara.swaraj@gmail.com समाचार चयन के लिए पीआरपी एक्ट के तहत जिम्मेदार।